उ़मरह
का
आसान तरीक़ा

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(सदर जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, (यू0पी0)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	उ़मरह का आसान तरीक़ा
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी-	चतुर्थ
पुस्तक संख्या-	2000
वर्ष-	2017
मूल्य-	40 रु०
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ।

Writer-	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi**
S. No.-	**2000**
Publisher-	**Maktaba Payam-e-Amn**
	Tagore Marg , Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)
Mobile–	**0091–9918194339, 9984490150**
E–Mail–	**jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522–2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुहम्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522–2741539)
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला, जबलपुर (मध्य प्रदेश)
5. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड (लखनऊ) (9198621671)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्रस्तावना	06
भाग-1—हज व उमरह से पहले कुछ अहम मश्वरे	
उमरह से पहले कुछ मश्वरे	08
पाक माल से उमरा	08
भाग-2—उमरह का मुख़्तसर तरीक़ा और दुआएँ घर से बैतुल्लाह तक	
घर से बैतुल्लाह तक	13
घर से बाहर आने के बाद यह दुआ पढ़े	14
भाग-3—हज और उमरह में फ़र्क़	
हज और उमरह में फ़र्क़	26
उमरह का हुक्म	26
उमरह में ज़रूरी बातें	26
एहराम का बयान	27
मीक़ात	28
एहराम पहनने का तरीक़ा	28
औरतों का एहराम	29
एहराम में जो चीज़ें मना हैं	29
एहराम में जायज़ काम	30
तवाफ़	30
तवाफ़ की नियत	31
तवाफ़ के अरक़ान	31
तवाफ़ की शर्तें	31
तवाफ़ के वाजिबात	31
तवाफ़ की सुन्नतें	32

विषय	पृष्ठ सं०
तवाफ़ के मुस्तहबात	32
तवाफ़ में मुबाह चीज़ें	33
तवाफ़ में हराम चीज़ें	33
तवाफ़ की मकरुह चीज़ें	34
तवाफ़ की क़िस्में	34
नफ़्ली तवाफ़ का वक़्त	36
तवाफ़ करने का तरीक़ा	36
सअ़ी का रुक्न	39
सअ़ी की शर्तें	39
सअ़ी के वाजिबात	40
सअ़ी की सुन्नतें	41
सअ़ी के मुस्तहबात	41
मकरुहात सअ़ी	41
बाल कट्वाना और एहराम खोलना	42
रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआओं का तर्जुमः	42
तवाफ़े विदाअ़	44
भाग-4—जिनायात	
जिनायात (तावान या जुर्माना)	47
दम	47
बुद्ना	47
सद्क़ा	47
मक्का के तारीख़ी मक़ामात	47
भाग-5—मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में दाख़िला का तरीक़ा	
मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में दाख़िला का तरीक़ा एक नज़र में	51
भाग-6—मदीना मुनव्वरह का सफ़र	
मदीना मुनव्वरह का सफ़र	54

विषय पृष्ठ सं०

रौज़-ए-अक्दस पर सलाम 54
रौज़-ए-अक्दस पर सलाम पढ़ने का तरीक़ा 55
ज़ियारत के वक़्त 59
मस्जिदे कुबा और जन्नतुल् बक़ीअ़ की ज़ियारत 59
क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त 60
मदीना मुनव्वरह के अहम मक़ामात 60
उहद का पहाड़ 61
ख़न्दक़ 61
जन्नतुल् बक़ीअ़ 62
मस्जिदे नब्वी के सात सुतून 62

भाग-7—ऊ़मरह से मुतअ़ल्लिक़ ग़ल्तियाँ

तवाफ़ की ग़ल्तियाँ 65
सअ़ी की ग़ल्तियाँ 66
कुछ ख़ास लफ़्ज़ों की तशरीह़ 66

भाग-8—ऊ़मरह करने का मुख़्तसर तरीक़ा

ऊ़मरह का तरीक़ा एक नज़र में 70
नियत और एह़राम बाँधने का तरीक़ा 70

ऊ़मरह का आसान तरीक़ा

प्रस्तावना

हज भी नमाज़, रोज़ः और ज़कात की तरह इस्लाम का एक अहम रुक्न है। जिस शख़्स में हज की शर्तें पाईं जाएँ उस पर हज फ़र्ज़ होता है और दूसरों के लिए नफ़्ल जो एक लाज़िमी हुक्म है।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने दुआ की कि “मैं अपनी औलाद को आप के अ़ज़ीम घर के पास आबाद करता हूँ। आप कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायल कर दीजिए”। (सूरः इब्राहीम)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि “जो शख़्स हज का इरादा करे तो उसको जल्दी करना चाहिए”। (मिश्कात)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि “रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हज करने वाले और उ़मरा करने वाले अल्लाह तआ़ला के मेहमान हैं अगर वह दुआ़ करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ़ क़ुबूल करता है और अगर वह उससे मग़्फ़िरत चाहते हैं तो वह उनकी मग़्फ़िरत करता है”। (मिश्कात)

क़ुर्आन और हदीस से हज की फ़र्ज़ियत और फ़ज़ायल मालूम होते हैं जो इस उम्मत के लिए अहम फ़रीज़ा हैं। इस को सामने रखते हुए ज़रुरत इस बात की थी कि आसान हिन्दी में हज और उ़मरा के फ़रायज़, अरकान और ज़रूरी मसायल से मुतअ़ल्लिक़ कोई हिन्दी में ऐसी किताब हो जो हर मौक़े पर रहनुमाई कर सके।

अल्हम्दुलिल्लाह इस किताब में इन तमाम बातों की रिआ़यत रखी गई है जैसे- इसमें हज व उ़मरा का मक़्सद, उसकी फ़ज़ीलत, वाजिब होने की शर्तें, एहकाम, एहराम, फ़रायज़, वाजिबात, सुन्नतें, उ़मरह का मुकम्मल तरीक़ा, मक्का व मदीना के अहम मसायल और तारीख़ी मक़ामात का तफ़्सील से ज़िक्र है, जिससे हाजी को हर मौक़े पर रहनुमाई मिलती है।

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ
9-12-2017

भाग-एक

हज व उ़मरह करने से पहले कुछ अहम मश्वरे

उ़मरह से पहले कुछ मश्वरे

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ
وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ۔

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक-ला-शरीका- लका- लब्बैक इन्नल्ह़म्दा-वन्नेअ़मता-लका-वल्मुल्क-ला- शरीका-लक"

(ह़ाज़िर हूँ मैं, ऐ अल्लाह, ह़ाज़िर हूँ मैं, ह़ाज़िर हूँ मैं। तेरा कोई शरीक नहीं, मैं ह़ाज़िर हूँ बेशक तमामतर तअ़रीफ़ और इनूआ़म तेरा ही है और सल्तनत भी तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं है।) **(सह़ीह़ बुख़ारी)**

(1) जब मुसलमान ह़ज या उ़मरह के सफ़र का इरादह करे तो तमाम गुनाहों से दिल से तौबः करे और ह़ज व उ़मरह के लिए ह़लाल माल इस्तेमाल करे, उसके ज़िम्मे जितना क़र्ज़ हो उसकी अदायगी करे और अगर उसके पास लोगों के माल, आबरु या जान का कोई ह़क़ बाक़ी हो तो अपने सफ़र से पहले उसको उन तक वापस कर दे या उनसे माफ़ करवा ले।

पाक माल से उ़मरा-

"अल्लाह तआ़ला पाकीज़ह है, पाकीज़ह ही चीज़ को कुबूल करता है" और तब्रानी ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब आदमी पाकीज़ह ज़ादे सफ़र के साथ ह़ज के लिए निकलता है और अपना पैर सवारी के रिकाब में रखकर लब्बैक पुकारता है तो उसको आसमान से एक पुकारने वाला जवाब देता है कि तेरी लब्बैक क़ुबूल और रह़मते इलाही तुझ पर नाज़िल हो। तेरा तोशा ह़लाल और तेरी सवारी ह़लाल और तेरा ह़ज मक़्बूल है, गुनाहों से पाक है।

जब आदमी ह़राम कमाई के साथ ह़ज के लिए निकलता है फिर सवारी के

रिकाब में पैर रखकर लब्बैक पुकारता है तो आसमान से एक पुकारने वाला जवाब देता है कि तेरी लब्बैक क़ुबूल नहीं, न तुझ पर अल्लाह की रह़मत हो, तेरा ज़ादे सफ़र ह़राम, तेरी कमाई ह़राम और तेरा ह़ज ग़ैर मक़्बूल हो।

(2) इसी तरह़ शिर्क, झूठ, ग़ीबत, चुग़लख़ोरी और दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने से अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे।

(3) ह़ज व उ़मरह के ज़रिये अल्लाह तआ़ला को राज़ी करना मक़्सद हो।

(4) ह़ज करने वाले को चाहिए कि ह़ज से पहले ह़ज के मसायल सीखे और मसायल किसी मोअ़तबर आ़लिम से दर्याफ़्त करता रहे और कोई मोअ़तबर किताब साथ रखे और उसको बार-बार पढ़ता रहे।

(5) सफ़र में कोई अच्छा साथी तलाश कर ले, अगर आ़लिम बाअ़मल मिल जाये तो बहुत अच्छा है ताकि ह़ज के अह़काम में मदद मिल सके, रफ़ीक़ अगर अजनबी हो तो ज़्यादह अच्छा होता है।

(6) सफ़र में फ़ुज़ूख़र्ची और कंजूसी न करे, इसलिए कि जो रुपया ह़ज में ख़र्च होता है उसका सवाब सात गुना या उससे ज़्यादा मिलता है।

(7) अपने साथ खाने में किसी को शरीक न करे तो बेहतर होता है। इसलिए कि अक्सर इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाता है और अगर शरीक करना हो तो अपने ह़क़ से कम पर राज़ी रहे।

(8) घर से निकलते वक़्त निहायत ख़ुश व ख़ुर्रम होकर निकले, ग़मग़ीन और रोता हुआ न निकले। घर से निकलने से पहले और बाद में कुछ सद्क़ः कर दे और घर में दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े। फिर अल्लाह तआ़ला से सफ़र में मदद और सहूलत की दुआ़ माँगे और निकलते वक़्त अपने दोस्तों, पड़ोसियों वग़ैरह से माफ़ी माँग ले और दुआ़ की दरख़्वास्त करे और मुसाफ़ह़ करे।

(9) क़ाफ़िला में जो शख़्स होशियार, दीनदार, तजुर्बेकार, इल्म वाला हो उसको अमीर बना लें।

(10) इस सफ़र में नमाज़ का एह़तिमाम बहुत ज़रूरी है। आ़मतौर पर लोग सुस्ती कर जाते हैं जो सख़्त गुनाह है।

(11) मुसाफ़िर के लिए नमाज़ में क़स्र है। इसलिए मुसाफ़िर की नमाज़ का तरीक़ा,

तयम्मुम का तरीक़ा और जहाज़ में नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा और क़िब्ला के रुख़ के बारे में ज़रूर मालूमात ह़ासिल कर लेना चाहिए।

इसी तरह़ इस सफ़र में ज़िना, लवातत, चोरी, सूदख़ोरी, मामलात में धोखा, अमानत में ख़यानत, नशा वाली चीज़ें या बीड़ी सिगरेट पीने, कपड़ों का टखने से नीचे लट्काने, घमण्ड, ह़सद, रियाकारी, ग़ीबत, चुग़लख़ोरी, मुसलमानों का मज़ाक़, होटल या कहीं टी०वी० व वीडियो या इण्टरनेट का ग़लत इस्तेमाल करने और तस्वीरें खींचने से परहेज़ करना चाहिए। इसलिए कि जिस तरह़ ह़रम की नेकी का सवाब बहुत है उसी तरह़ ह़रम की बुराईयाँ भी बहुत सख़्त हैं। इस से हुज्जाज को बचना चाहिए।

(12) अगर किसी बीमारी या ख़ौफ़ की वजह से मह़रम को डर हो कि वह अपना ह़ज मुकम्मल न कर पाएगा तो बेहतर यह है कि नियत करते वक़्त इन अल्फ़ाज़ का भी इज़ाफ़ा करे إن محلی حیث حَبَسْتَنِی यानी "ऐ अल्लाह! तू मुझे जहाँ रोक दे वहीं ह़लाल हो जाऊँगा"।

(13) छोटे बच्चे और छोटी बच्ची का ह़ज सह़ी होगा लेकिन बुलूग़त के बाद फ़र्ज़ ह़ज उस की तरफ़ से काफ़ी न होगा।

(14) किसी ग़ैर मह़रम को हरगिज़ साथ में न लाना चाहिए इसलिए कि तमाम एहतियात के बावजूद शरई पर्दे की पाबन्दियाँ नहीं हो पातीं।

(15) ह़ज या उ़मरह के सफ़र में शौहर या मह़रम के साथ होने के सिलसिले में मुख़्तलिफ़ फ़िक़्ही मस्लक हैं और फ़ुक़्हा ने तवील बह़स की है। इस में इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक सफ़रे ह़ज में औ़रत के साथ मह़रम का होना ज़रुरी है और अगर दूसरी शरायत की वजह से किसी औ़रत पर ह़ज फ़र्ज़ है मगर वह मह़रम को साथ ले जाने से क़ासिर है तो उस पर ह़ज फ़र्ज़ न होगा।

और यह भी ज़रूरी है कि यह मह़रम आ़क़िल, बालिग़, दीनदार और क़ाबिले एतिमाद शख़्स हो, नादान बच्चे या फ़ासिक़ नाक़ाबिले एतिमाद शख़्स के साथ सफ़र जायज़ नहीं।

इस के साथ-साथ औ़रत को वजूबे ह़ज की चौथी शर्त में यह भी पेशेनज़र

रखना चाहिये कि सफ़रे ह़ज में (अगर औ़रत किसी को साथ ले जा रही है तो) साथ में ले जाने वाले मह़रम के मसारिफ़े सफ़र की ज़िम्मेदारी भी ह़ज के लिये जाने वाली ख़ातून पर ही होगी। **(हिदाया ह़िस्सा-1)**

चाहे इ़द्दत वफ़ात की हो या तलाक़ की हर ह़ाल में दौराने इ़द्दत ह़ज वाजिब न होगा। **(आ़लमग़ीरी ह़िस्सा 1 पेज नं० 141)**

(16) मोबाइल से बहुत परहेज़ करना चाहिए। मोबाइल की वजह से यकसुई बिलकुल नहीं हो पाती। इसलिए मोबाइल बन्द रखना चाहिए सिर्फ़ एक घण्टा कोई मुतय्यन कर लें जिस वक़्त मोबाइल खुला रखे तो बेहतर है।

(17) मक्का पहुँचने के बाद ह़रम थोड़ा आराम कर के जाएँ इसलिए कि वहाँ तवाफ़ और सई़ दोनों करनी होती है जिसमें काफ़ी वक़्त लगता है लेकिन मदीना में आराम करने की ज़रूरत नहीं होती इसलिए कि वहाँ कोई तवाफ़ नहीं करना होता।

(18) कमरा में पर्दे लगाने के लिए एक या दो चादर इसी तरह़ चिमटी, आलपीन कुछ रख लें तो बेहतर है जिससे अगर कमरे में कोई ग़ैर मह़रम हो तो पर्दा लगाया जा सके।

(19) औ़रतों के लिए हैट वाली टोपी लगाकर नकाब की पट्टी ऊपर से डाल कर पर्दा करने में आसानी होती है, इसलिए औ़रतों को हैट टोपी रख लेनी चाहिए।

(20) चार जोड़े कपड़े और दो जोड़ा एह़राम और दो जोड़ा चप्पल रखना बेहतर है।

(21) एक बैग़ तक़्रीबन 12 इंच ऊँचा और छः इंच चौड़ा जिसमें एक जोड़ा कपड़ा, एक जोड़ा चप्पल और एक किताब रखकर तवाफ़ किया जा सकता हो।

(22) कोई मस्ला पूछना हो तो कसी आ़लिम से दर्याफ़्त करें।

(23) एक छोटा क़ुर्आन साथ रखना चाहिए ताकि आसानी हो इसलिए कि क़ुर्आन मजीद का एक दौर करना मुस्तह़ब है।

(24) हम लोग तहज्जुद में आते और फ़ज्र के बाद तवाफ़ करते। उसके बाद तिलावत करते फिर इशराक़ पढ़कर कमरे आते, नाश्ता करके थोड़ा आराम करते फिर खाना खाकर सुबह़ 11:00 बजे ह़रम दोबारा आ जाते उस के बाद इ़शा पढ़कर तवाफ़ कर के वापस जाते।

भाग–2

उ़मरह का मुख़्तसर तरीक़ा और दुआ़एँ

घर से बैतुल्लाह तक

घर से बैतुल्लाह तक

(1) ह़ज या उ़मरह करने वाले को चाहिये कि जाने से पहले शिर्क से तौबः कर ले और अगर किसी से क़र्ज़ लिया हो तो अदा कर दे। इसी तरह़ अगर किसी को तक्लीफ़ पहुँचाई हो तो उस से माफ़ी माँग ले और दो बैगों में सामान रख ले तो बेहतर है। बड़े बैग़ में कपड़े आदि रखे इसलिए कि वह लगेज में चला जाता है और दूसरा छोटा हैंडबैग रखे जो साथ में रहता है।

(2) उ़मरह करने के लिये पहले नाख़ून और जिस्म की सफ़ाई कर के ग़ुस्ल करे जिस में तीन बातों का ख़याल रखें।

(i) ग़ुस्ल के वक़्त ग़रारा के साथ कुल्ली करें।

(ii) नाक में नर्म हड्डी तक पानी पहुँचायें।

(iii) पूरे जिस्म पर पानी बहाये।

ग़ुस्ल के बाद घर से भी एह़राम की चादरें पहनीं जा सकती हैं वरना साफ़ कपड़े पहने ले। अगर हवाई जहाज़ से जाना हो तो हैंडबैग में एह़राम की दो चादरें, एक जोड़ा हवाई चप्पल (जिस से पैर के ऊपर वाली हड्डी बन्द न हो) और पासपोर्ट व सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ पैसे व काग़ज़ात रख ले फिर एह़राम जहाज़ पर चढ़ने से पहले एयरपोर्ट पर पहन ले।

(3) घर से निकलने से पहले अगर मकरुह वक़्त न हो तो दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ ह़ाजत पढ़कर कुबूलियत और सफ़र के सहूलत के लिये दुआ़ कर ले और घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ करें:-

بِسْمِ اللهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِيْ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى، وَاحْفَظْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

बिस्मिल्लाहि वला ह़ौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल् अ़लीय्युल

अ़ज़ीम, तवक्कलतु अ़लल्लाहि, अल्लाहुम्मा वफ़्फ़िक़नी लिमा तुहि़ब्बु वतरज़ा, वह़फ़िज़्नी मिनश्शैतानिर्रजीम।

(बस अल्लाह का नाम ले कर निकलता हूँ और नहीं है ताक़त नेकी करने की और बदी से बचने की। मगर तौफ़ीक़े इलाही से जो बुलन्द शान वाला और बुर्ज़ुग़ी वाला है मैं ने भरोसा किया अल्लाह पर ऐ अल्लाह! मुझे इस बात की तौफ़ीक़ दे जिसे तू पसन्द करता है और जिस से तू ख़ुश होता है और मुझे मरदूद शैतान से मह़फ़ूज़ रख।)

घर से बाहर आने के बाद यह दुआ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ
اَوْ اَجْهَلَ اَوْ یُجْهَلَ عَلَیَّ بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَی اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا
قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِیْ لِمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰی
وَاعْصِمْنِیْ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिन अन अज़िल्ला औ ओज़िल्ला औ अज़्लिमा औ उज़्लमा औ अज्हला औ युज्हला अ़लय्या बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अ़लल्लाहि ला ह़ौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल्अ़लीय्यील अ़ज़ीम। अल्लाहुम्मा वफ़्फ़िक़नी लिमा तुहि़ब्बु वतरज़ा वअ़सिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम।

(ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस से कि खुद गुमराह हो जाऊँ या गुमराह किया जाऊँ या ज़ुल्म करूँ या मज़लूम बनूँ या बेवक़ूफ़ी करूँ या बेवक़ूफ़ बनाया जाऊँ। मैं अल्लाह का नाम लेकर (निकलता हूँ) अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ। नहीं है ताक़त नेकी करने की और न बदी से बचने की मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से जो बहुत बुलन्द अ़ज़्मत वाला है। ऐ अल्लाह! मुझे इस चीज़ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा जिसे तू अच्छा समझता है और जिस से तू राज़ी होता है और बचा ले मुझे मरदूद शैतान से"।

(4) औ़रतों का एह़राम सिले हुये कपड़े ही होते हैं सिर्फ़ उन्हें सर के बालों को एक रुमाल से बाँध लेना काफ़ी होता है ताकि कोई बाल नंगा न रहे और चेहरे पर कपड़ा इस तरह़ लट्काये कि कपड़ा चेहरे को न लगे। इस के लिये अगर कैप लगाकर ऊपर से नक़ाब की पट्टी डाल ले तो बेहतर है और अगर औ़रत को है़ज़ आ रहा हो तो हर अ़मल करेगी लेकिन तवाफ़ या नमाज़ जब तक पाक न हो जाये उस वक़्त तक नहीं करेगी।

(5) जब जहाज़ पर जाने के लिये अन्दर एयरपोर्ट पर पहुँचे तो एह़राम पहन ले लेकिन 'लब्बैक' और नियत अभी न करे और अगर मौक़ा हो तो दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ ले जिस में पहली रकअ़त में सूरः फ़ातिह़ा के बाद सूरः काफ़िरून 'कुल या अय्युहल काफ़िरून' और दूसरी रकअ़त में सूरः इख़्लास यानी 'कुल हुवल्लाह' पढ़े।

(6) हवाई जहाज़ पर बैठने के बाद जब कुछ वक़्त गुज़र जाये तो नियत इस तरह़ करेः-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ۔

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल् उ़मरता फ़यस्सिरहु ली वतक़ब्बलहु मिन्नी।

("ऐ अल्लाह! मैं उ़मरह की नियत करता हूँ, तू उसे मेरे लिये आसान कर दे और मेरी तरफ़ से उसे क़ुबूल फ़रमा"।)

(7) फिर लब्बैक तीन मर्तबः पढ़े मर्द बुलन्द आवाज़ से और औ़रतें आहिस्ता आवाज़ से।

لَبَّیْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّیْكَ لَبَّیْكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ لَبَّیْكَ اِنَّ الْحَمْدَ
وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ۔

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक लब्बैक ला शरीका लका लब्बैक इन्नल्हम्दा वन्निअ़मता लका वलमुल्कु ला शरीका लका।

(ह़ाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह ह़ाज़िर हूँ मैं ह़ाज़िर मैं तेरा कोई शरीक नहीं मैं ह़ाज़िर हूँ बेशक तमामतर तअ़रीफ़ और इन्आ़म तेरा ही है और सल्तनत

भी तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं है।) (सहीह़ बुख़ारी)

(8) फिर दुरुद शरीफ़ पढ़े।

(9) फिर यह दुआ़ पढ़ेः-

"اَللّٰهُمَّ إِنِّی اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ سَخَطِكَ وَالنَّارِ۔"

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका रिज़ाका वल्जन्नता वऊ़ज़ुबिका मिन सख़तिका वन्नार।

("ऐ अल्लाह! मैं ख़ुशनूदी चाहता हूँ और तुझ से जन्नत का तलबग़ार हूँ और तेरी गिरफ़्त और तेरे जहन्नम की आग से पनाह माँगता हूँ"।)

(10) अब नियत हो गई इसलिए मर्द बुलन्द आवाज़ से और औ़रतें आहिस्ता-आहिस्ता जब तक ह़रम न पहुँचें बराबर तल्बिया पढ़ते रहें। एह़राम की ह़ालत में ह़रम पहुँचने से पहले तक तल्बिया सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र है।

(11) जहाज जद्दा एयरपोर्ट पर आ़मतौर से उतरता है फिर वहाँ से छोटी या बड़ी गाड़ी से मक्का जाया जाता है जिस में अपने सामान को अपने ही गाड़ी पर रखवाये और चेक कर ले। फिर मक्का नज़र आये तो यह दुआ़ करें-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِیْ بِهَا قَرَارًا وَّارْزُقْنِیْ فِيْهَا رِزْقًا حَلَالًا۔

अल्लाहुम्माजअ़ल ली बिहा क़रारव्वंरज़ुक़नी फ़ीहा रिज़्क़न ह़लाला।

("ऐ अल्लाह! मुझे इस में क़रार और ह़लाल रोज़ी अ़ता फ़रमा दे")

(12) मक्का में 'बाबुल्मअ़ला' की तरफ़ से दाख़िल होना अफ़्ज़ल है, लेकिन अब मुश्किल है।

(13) मक्का पहुँच कर आ़मतौर से क़यामगाह गाड़ी वाले पहुँचाते हैं वहाँ थोड़ा आराम कर ले तो बेहतर है। उस के बाद मस्जिदे ह़राम आये लेकिन कोई भी नमाज़ जमाअ़त से छूटने न पाये, बल्कि कअ़बः के सामने ही पाँचों नमाज़ों का एहतिमाम करे तो बेहतर है।

(14) जब मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो तो यह दुआ़ पढ़ेः-

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ، وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ، اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि वअऊ़ज़ुबिल्लाहिल् अ़ज़ीम, वबिव्ज़ुहिल् करीम, वसुल्तानिहिल् क़दीम, मिनश्शैतानिर्रहीम, अल्लाहुम्मफ़्तह़ली अब्वाबा रह़मतिक

(15) जब बैतुल्लाह पर नज़र पड़े तो यह दुआ़ पढ़ेः-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइलाहा इल्लल्लाह

(16) फिर दुरुद शरीफ़ पढ़े।

(17) फिर अपनी भाषा में ख़ूब जो चाहे दुआ़ करे।

(18) इस के बाद यहाँ छः काम करना है तीन काम हज्रे अस्वद या हरी लाइट पर पहुँचने से पहले और तीन काम ह़ज्रे अस्वद के सामने।

(i) तल्बिया पढ़ना बन्द कर दे।

(ii) इज़्तिबाअ़ करे यानी ऊपर वाली चादर को दाहिने बग़ल से निकाल कर बाएँ कन्धे पर डाल ले।

(iii) तवाफ़ की नियत करे।

इसी तरह तीन काम हज्रे अस्वद के सामने करे।

(i) फिर ह़ज्रे अस्वद के दायीं ओर रुक्न यमानी की तरफ़ इस तरह़ खड़ा हो कि पूरा हज्रे अस्वद आपके दायीं ओर हो।

(ii) कअ़बः सामने रहे और यह दुआ़ पढ़ता हुआ हाथ कानों तक उठाये।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल्ह़म्द

(iii) फिर ह़ज्रे अस्वद के पास जाये अगर चूम सकता हो तो चूमे वरना हाथ उठा कर ह़ज्रे अस्वद के सामने कर के दाहिना या दोनों हाथ चूम ले (इस को इस्तिलाम कहते हैं।)

इसी तरह़ हर चक्कर के शुरु करने से पहले इस्तिलाम करे यानी हाथ उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल् ह़म्द पढ़े और हाथों को गिरा दे।

(19) अब तवाफ़ शुरु कर के यह दुआ़ कर ले।

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ، وَ تَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ، وَ وَفَاءً بِعَهْدِكَ ،
وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "
"اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ رَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ"

"अल्लाहुम्मा ईमानन् बिका वतस्दीक़न बिकिताबिका ववाफ़अन बिअ़हदिका वइत्तिबाअ़न लिसुन्नति नबीय्यिका मुह़म्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम"।

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका राह़तन इ़न्दल मौति वल्अ़फ़्वा इ़न्दल् ह़िसाब"।

(ऐ अल्लाह! तुझ पर ईमान लाते हुये ओर तेरे अह़काम की तस्दीक़ करते हुये और तेरे अ़हद को पूरा करने के लिये और तेरे नबी बरह़क़ मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत की इत्तिबअ़ में यह तवाफ़ करता हूँ।

नोट– आ़मतौर से लोग हर चक्कर की अलग-अलग दुआ़एँ पढ़ते हैं जबकि हर चक्कर की अलग-अलग दुआ़एँ सुन्नत से साबित नहीं हैं, इसलिये जो दुआ़ याद हो माँगें वरना सुब्ह़ाल्लाहि वल्ह़म्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहुअ अकबर पढ़ें और अपनी ज़बान में दुआ़ करता रहे।

(20) और तीन चक्कर में मर्द रमल करे (यानी अकड़ कर चले।)

(21) इस तरह़ एक चक्कर जब ह़ज्रे अस्वद का पूरा हो जाये तो अगर ह़ज्रे अस्वद को बोसा दे सकता हो तो बोसा दे वरना दोनों हाथों को उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल् ह़म्द पढ़ते हुये दोनों हाथ गिरा दे और आगे बढ़कर दूसरा चक्का शुरु कर दे।

(22) मख़्सूस दुआ़यें शरीअ़त से साबित नहीं हैं।

(23) अल्बत्ता रुक्न यमानी के पास जब पहुँचे तो उस पर दोनों हाथ फेरे या सिर्फ़ दाहिना हाथ फेरे लेकिन बोसा न दे और यह दुआ़ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِي
الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्वा वल् आ़फ़ियता वल् मुआ़फ़ातद्दाइमता फ़िद् दीनी वद्दुनिया वल्आख़िरति वल्फ़ौज़ा बिल्जन्नती वन्नजाता मिनन् नार।

(24) जब रुक्न यमानी से आगे बढ़े तो ह़ज्रे अस्वद से पहले यह दुआ़ कर सकता है:-

رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۔
وَأَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ ۔ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ۔

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह़सानतवं वफ़िल् आख़िरति ह़सानतवं वक़िना अ़ज़ाबन्नार वअदख़िलनल् जन्नता मअ़ल् अबरार या अ़ज़ीज़ु या ग़फ़्फ़ार या रब्बल आ़लमीन

(25) एक चक्कर ह़ज्रे अस्वद पर पूरा होने पर इस्तिलाम करे और अगला चक्कर शुरु करे।

(26) जिस वक़्त मुल्तिज़िम के सामने आये तो यह दुआ़ कर सकता है:-

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَ تَصْدِيْقًا بِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ
وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अल्लाहुम्मा ईमानन् बिका वतस्दीक़न बिका ववफ़ाअन बिअ़हदिका वइत्तिबाअ़न लिसुन्नति नबीय्यिका मुह़म्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

(27) मक़ामे इब्राहीम के पास आये तो यह दुआ़ कर सकता है:-

اَللّٰهُمَّ إِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ
وَالْأَمْنُ اَمْنُكَ وَالْعَبْدُ عَبْدُكَ وَ أَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ
عَبْدِكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَآئِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ۔

अल्लाहुम्मा इन्ना हाज़ाल् बैता बैतुका वलह़रमु ह़रमुका वल् अम्नु अम्नुका वल् अ़ब्दु अ़ब्दका वअना अ़ब्दुका वब्नु अ़ब्दिका वहाज़ा मक़ामुल् आ़इज़िबिका मिनन् नारि।

(28) और जब रुक्ने शामी शिमाली मश्रिक़ी गोशा के पास आये तो यह दुआ़ कर सकता हैः-

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ وَالشِّقَاقِ
وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ
فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ۔

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ूबिका मिनश्शक्कि वश्शिर्कि वश्शिक़ाक़ि वन्निफ़ाक़ि वसूइल अख्लाक़ि वसूइल मन्ज़रि वल् मुन्क़लाबि फ़िल् मालि वल् अहलि वल् वलदि।

(29) जब मीज़ाबे रहमत के सामने आये तो यह दुआ़ कर सकता हैः-

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِيْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ
عَرْشِكَ وَلَا بَاقِيَ اِلَّا وَجْهَكَ وَاسْقِنِيْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ شَرْبَةً هَنِيْئَةً
مَرِيْئَةً لَا نَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا۔

अल्लाहुम्मा अज़िल्लनी तह़ता ज़िल्लि अ़रशिका यौमा ला ज़िल्ला इल्ला ज़िल्लु अ़रशिका वला बाक़िया इल्ला वज्हका

वस्क़िनी मिन ह़ौज़ि नबीय्यिका सय्यिदना मुह़म्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम शरबतन हनीअतन मुरअिय्यतन ला नज़्मओ बअ़दहा अबदा।

(ऐ अल्लाह! मुझे अपने साये अ़र्श के नीचे उस दिन जगह दे दे कि वहाँ सिवाय तेरे अ़र्श के और कहीं साया न होगा और सिवाय तेरी ज़ात के और कोई बाक़ी न रहेगा और मुझे अपने प्यारे यानी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ह़ौज़े कौसर से खुशग़वार और खुशज़ायक़ा शरबत के घूंट पीने को नसीब फ़रमा कि (जिस के पीने के बाद) फिर कभी प्यास न लगे"।

(30) फिर आख़िरी शौत (चक्कर) में इस्तिलाम कर के ख़त्म करे।

(31) फिर दो रकअ़त नमाज़ वाजिब मक़ामे इब्राहीम के पास पढ़ेः-

(32) फिर यह दुआ़ करेः-

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِيْ
وَتَعْلَمُ حَاجَتِيْ فَاَعْطِنِيْ سُؤْلِيْ وَتَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ
فَاغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا يُبَاشِرُ
قَلْبِيْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِيْ اِلَّا
مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرِضًا مِّنْكَ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ اَنْتَ وَلِيِّ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَاَلْحِقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ“۔

अल्लाहुम्मा इन्नका तअ़लमु सिर्री वअ़लानियति फ़अक़्बिल् मअ़ज़िरती वतअ़लमु ह़ाजति फ़अ़तिनी सूअली वतअ़लमु माफ़ी नफ़्सी फ़ग्फ़िरली ज़न्बी अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका ईमानन युबाशिरु क़ल्बी वयक़ीनन सादिक़न ह़त्ता अअ़लमु अन्नहु ला युसीबुनी इल्ला मा कतबता ली वरिज़न मिन्का बिमा क़समता ली अन्ता वलिय्यी फ़िद्दुनिया वलआख़िरति तवफ़्फ़नी मुस्लिमन वअल्ह़िक़्नी बिस्सालिहीन।

(ऐ अल्लाह! बेशक तू मेरी छिपी और खुली हुई बातों को बख़ूबी जानता

है बस मेरी मअ़रिफ़त क़ुबूल फ़रमा और तू मेरी ह़ाजत को जानता है बस जो मेरा सवाल है वह पूरा कर दे इलाही! तू ख़ूब जानता है जो (ऐ़ब) मेरे नफ़्स में हैं बस मेरी ख़ता से दरगुज़र फ़रमा। ऐ मेरे रब! मैं तुझ से ऐसा ईमान माँगता हूँ जो मेरे क़ल्ब में पेवस्त हो जाये और ऐसा सच्चा यक़ीन कि मुझे नसीब हो जाये तह़क़ीक़ जो (अच्छी या बुरी बात) मुझे पेश आये वह मेरे लिए पहले से मुक़द्दर थी और जो तूने मेरे नसीब में लिख दिया है उस पर अपनी तरफ़ से मुझे रज़ा कामिल अ़ता फ़रमा दे कि तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा कारसाज़ है। ऐ अल्लाह! मुझे ह़ालते इस्लाम पर मौत दे और अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा।)

(33) फिर ज़मज़म का पानी पी कर यह दुआ़ करे-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْماً نَافِعاً وَّرِزْقاً وَّاسِعاً وَّ شِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इ़ल्मन नाफ़िअ़न वरिज़्क़न वासिअ़न वशिफ़ाअम्मिन कुल्ली दाअिन।

(ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ नफ़ा पहुँचाने वाले इ़ल्म का और "मेरी रोज़ी में कुशादगी मरह़मत फ़रमा और हर बीमारी से शिफ़ा अ़ता फ़रमा"।

(34) इस के बाद नवाँ इस्तिलाम करे अगर उ़मरह कर रहा है तो सअ़ी भी करनी होगी इसलिए सफ़ा की तरफ़ जाये।

(35) फिर सफ़ा पर जाकर यह पढ़ेः-

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ

"इन्नस्सफ़ा वल् मरवता मिन शआ़रिल्लाहि"।

(बेशक सफ़ा और मरवह अल्लाह की निशानियों में से हैं।)

(36) फिर सफ़ा पर बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के दोनों हाथ दुआ़ की तरह उठाये और सअ़ी की नियत इस तरह़ करे (इसलिए कि सअ़ी वाजिब है।)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِيْدُ اَنْ اَسْعٰى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ اَشْوَاطٍ لِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ فَيَسِّرْهُ لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ.

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदु अन अस्अ़ा बैनस्सफ़ा वल् मरवति सबअ़ता अश्वातिन लिवजहिकल् करीम फ़यस्सिरहु ली वतक़ब्बलहु मिन्नी

("ऐ अल्लाह! मैं सफ़ा और मरवह के दर्मियान सात चक्करों की सअ़ी करता हूँ। सिर्फ़ तेरी ज़ात के लिये उस को मेरे लिये आसान कर दे और मुझ से क़ुबूल फ़रमा"।)

(37) और इस के बाद तीन बार 'ह़म्द व सना' तक्बीर व तह़लील बुलन्द आवाज़ से इस तरह़ कहेः-

"اَللّٰهُ اَكْبَرُ. اَللّٰهُ اَكْبَرُ. اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ"

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल् ह़म्द।

(38) फिर यह दुआ़ करेः-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَ تَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَ تَعْلَمُ مَالَا نَعْلَمُ. اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ.

रब्बिग़फ़िर वरह़म वतजावज अ़म्मा तअ़लमु वतअ़लमु वतअ़लमु माला नअ़लमु इन्नका अन्तल् अअ़ज़्ज़ुल् अकरम।

(मेरे रब! मुझे बख़्श दे और मुझ पर मेहरबानी फ़रमा और उन तमाम ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा जिन को तू जानता है बेशक तू वह सब कुछ जानता है जो हम नहीं जानते, बेशक तू ही मअ़बूद है बेह़द इ़ज़्ज़त वाला है बेह़द बुज़ुर्गी वाला इसी तरह़ कोई भी दुरूद या चौथा कलिमा पढ़ता रहे।)

(39) फिर दुरुद शरीफ़ पढ़े और जो चाहे दुआ़ करे और दर्मियान में यह दुआ़ करता रहेः-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ الْاَعَزُّ وَالْاَكْرَمُ

रब्बिग़फ़िर वरह़म वअन्तल अअ़ज़्ज़ुल् अकरम।

(ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ फ़रमा और रह़म फ़रमा और तू ही मअ़बूद है बेह़द इ़ज़्ज़त वाला और बेह़द बुज़ुर्गी वाला।)

(40) सअ़ी करने के वक़्त इज़्तिबाअ़ हरग़िज़ न करे और मर्द मीलैन अख़्ज़रैन के दर्मियान तेज़ चलें और औ़रतें न दौड़ें।

(41) इस तरह़ मरवह पहाड़ पर सात चक्कर पूरे हो जाएँगे अब मस्जिदे ह़राम में जहाँ बसहूलत जगह मिले दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़े और दुआ़ करे।

(42) फिर मर्द सर के बाल मुंडवाए या कट्वाए और औ़रतें सर के बाल एक उंगली की पोर के बराबर कट्वाए लेकिन किसी ग़ैर मह़रम के हाथ से न कट्वाए। इस के बाद एह़राम से बाहर आ जाए। अब तमाम ह़लाल चीज़ें जो एह़राम की वजह से मना थीं जायज़ हो जाएँगी। अब और जितने भी दिन मक्का में क़याम हो पाँचों नमाज़ों को कअ़बः के सामने पढ़ने का एहतिमाम करे और जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके तवाफ़ और दुआ़ का एहतिमाम करे।

नोटः- ऊपर दी गई दुआ़यें अगर अ़रबी में याद न हों तो उर्दू या अपनी ज़बान में ही कोई भी ख़ैर की दुआ़ माँग सकते हैं लेकिन आहिस्ता और समझ के दुआ़ करना ज़्यादा बेहतर है। इस तरह़ आप का उ़मरह मुकम्मल हो गया। अब जब तक क़याम हो कोशिश करें कि सभी नमाज़ें कअ़बः के सामने पढ़ने का एहतिमाम हो। इसलिए कि कअ़बः को देखना ही एक अहम यहाँ की नफ़्ली अ़िबादत है।

भाग–3

ह़ज और उ़मरह में फ़र्क़

ह़ज और उमरह में फ़र्क़

(1) उ़मरह छोटे ह़ज को कहते हैं।

(2) ह़ज फ़र्ज़ है, उ़मरह फ़र्ज़ नहीं। ह़ज एक मुक़र्रह वक़्त पर होता है उ़मरह साल में किसी वक़्त भी सिवाय ह़ज के पाँच दिनों के (9 ज़िलूह़िज्जा से 13 ज़िलूह़िज्जा तक) किया जा सकता है।

(3) उ़मरह में सिर्फ़ एह़राम बांधना, तवाफ़ करना, सफ़ा और मरवह के दर्मियान सई़ करना और ह़जामत बनवा कर एह़राम खोल देना होता है लेकिन ह़ज में इन के अ़लावह उक़ूफ़ अ़रफ़ात उक़ूफ़ मुज़्दलिफ़ा में नमाज़ों को इकट्ठा करके पढ़ना, जिसमें ख़ुत्बः और तवाफ़े विदाअ़ भी शामिल हैं।

(4) उ़मरह में तवाफ़ शुरु करते वक़्त तल्बिया पढ़ना बंद हो जाता है और ह़ज में 'जमरतुलू उ़क़बा' की रमि शुरु करते वक़्त बंद होता है।

(5) अगर उ़मरह फ़ासिद हो जाए या ह़ालते जनाबत में 'तवाफ़' करे तो ख़ैरात के तौर पर एक बकरी ज़ब्ह़ करना काफ़ी है, लेकिन ह़ज में काफ़ी नहीं।

(6) ह़ज और उ़मरह किसी दूसरे की तरफ़ से किये जा सकते हैं चाहे वह ज़िन्दा हों या फ़ौत हो चुके हों लेकिन नियत करते वक़्त उन का नाम लेना होगा जिन की तरफ़ से किये जाएँगे।

उ़मरह का हुक्म

उ़मरह छोटे ह़ज को कहते हैं। इस में सिर्फ़ एह़राम, तवाफ़े कअ़बः और सफ़ा व मरवह की सई़ शामिल है।

उ़मरह के लिए कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है पूरे साल में कभी भी 8 ज़िलूह़िज्ज से 13 ज़िलूह़िज्ज के अ़लावह पूरे साल में कभी भी किया जा सकता है।

ह़न्फ़ी मस्लक में उ़मरह ज़िन्दग़ी में एक बार सुन्नते मुअक्किदह है और इमाम शाफ़ई (रह़०) के नज़्दीक एक बार फ़र्ज़ है।

● ह़ज के दिनों में जो उ़मरह किया जाता है उस में ह़ज भी शामिल होता है,

इन दिनों के अ़लावह उ़मरह अकेले किया जाता है।

● मक्का या आस-पास के रहने वाले जब उ़मरह करना चाहें तो अपने मीक़ात पर उ़मरह की नियत से एह़राम बाँधें।

● दूसरे मुल्क से जाने वाले अगर मक्का के क़याम में उ़मरह करना चाहें तो 'तन्ई़म' मक़ाम से एह़राम बाँधें जो मक्का से सिर्फ़ तीन मील दूर है और यहीं से सय्यदुल अम्बिया (सल्ल०) ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को एह़राम बाँधने का हुक्म दिया था।

इमाम अबू हनीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक 'तन्ई़म' से एह़राम बाँधना अफ़्ज़ल है। इमाम शाफ़ई (रह़०) के नज़्दीक 'जुलूहुलैफ़ा' से अफ़्ज़ल है जो मक्का मुकर्रमा से लगभग 12 मील दूर है और 'बड़ा उ़मरह' के नाम से मशहूर है और यहाँ से सय्यदुलू अनाम (सल्ल०) ने ख़ुद एह़राम बांधा था जिस वक़्त कि वह मदीना मुनव्वरह से मक्का मुकर्रमा पहुँचे थे।

नोट- दूसरों के लिए नफ़्ली उ़मरह करना भी जायज़ है।

उ़मरह में ज़रूरी बातें

उ़मरह अदा करते वक़्त इन बातों का ख़याल रखना सुन्नत है।

(1) सब से पहले उ़मरह की नियत करना।

(2) फिर कअ़बः जाकर तवाफ़ की नियत करना।

(3) तवाफ़ के सात चक्कर लगाने के बाद मक़ामे मुल्तज़िम पर दुआ़ माँगना।

(4) दुआ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअ़त नमाज़ वाजिब अदा करना।

(5) ज़मज़म पर जाकर पानी पीना।

(6) फिर सफ़ा और मरवह के दर्मियान सई़ करना।

(7) बाल कट्वा कर या मुंडवा कर एह़राम खोल देना और ग़ुस्ल करके अपने कपड़े पहन लेना, यह उ़मरह कहलाता है।

एह़राम का बयान

एह़राम के माने हैं बाज़ जायज़ उमूर को अपने ऊपर ह़राम कर लेना। ह़ाजी जब मीक़ात से एह़राम बांध लेता है तो उस पर कुछ पाबन्दियाँ आ़यद हो

जाती हैं और चन्द हलाल चीज़ें भी हराम हो जाती हैं उन में से एक पाबन्दी मर्द के लिए सिला हुआ लिबास पहनने की मुमानिअ़त है। सिले हुए लिबास की जगह जो लिबास पहना जाता है उसे भी एहराम कहते हैं।

मीक़ात–

मीक़ात उन मक़ामात को कहते हैं, जहाँ से मक्का शरीफ़ में जाने के वास्ते एहराम बाँधते हैं। (हिन्दुस्तान से बज़रिये हवाई जहाज़ सफ़र की सूरत में सवार होते वक़्त एहराम बाँध लें और दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ लें लेकिन नियत न करें, इसलिए कि मीक़ात (यलमूलम) रास्ते में पड़ता है नियत तो वहाँ से होनी चाहिए लेकिन कभी-कभी मालूम नहीं हो पाता इसलिए कुछ दूर जहाज़ जाने के बाद सिर्फ़ उमरह की नियत कर लें और बहरी जहाज़ से जाने वाले जद्दह से तक़रीबन 45 मील पहले ही 'यलमूलम' के मक़ाम पर जहाज़ ही में एहराम बांध लें या पहले बाँध लें उस वक़्त यह सिर्फ़ उमरह के लिए एहराम होगा।

एहराम पहनने का तरीक़ा–

जब एहराम पहनने का इरादा करें तो पहले ग़ुस्ल करे और एहराम के लिए दो सफ़ेद चादरें होना सुन्नत है। एक का तहबन्द बना ले और दूसरी को चादर की तरह ऊपर ओढ़ ले, कंधे नंगे न रखे सर्दी के वक़्त कम्बल भी कंधे से ओढ़ा जा सकता है।

एहराम पहनने के बाद दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ें पहली रकअ़त में अल्हम्दुलिल्लाहि के बाद 'कुल या अय्युहल् काफ़िरून' और दूसरी में 'कुलहुवल्लाहु' पढ़ना अफ़ज़ल है उस के बाद उमरह की नियत की जाएगी, मगर हिन्दुस्तानी लोग जहाज़ में बैठकर थोड़ी दूर जाने के बाद नियत करें। उमरह करने के बाद एहराम खोल दिया जाता है।

अगर हज्जे बदल करना हो तो बेहतर यही है कि हज की भी नियत उमरह के साथ करें, इस सूरत में उमरह के बाद हज तक एहराम नहीं खोला जाएगा, जो एक मुश्किल काम है। अगर हज में कई दिन बाक़ी हों तो ऐसी सूरत में हिन्दुस्तानियों के लिए बेहतर है कि सिर्फ़ उमरह की नियत करें और उमरह करने

के बाद एहराम खोल दें।

औरतों का एहराम

मर्द को तो सिर्फ़ दो बिना सिली चादरें पहनना चाहिए और बाक़ी कपड़े उतार देना चाहिए लेकिन औरतों के लिए यह हुक्म है कि वह सिले हुए कपड़े पहने रहें। अलबत्ता अपने सर के बालों को एक रुमाल से बाँध लें, कोई बाल नंगा न रहे, यह उन का एहराम है लिबास में ख़ुसूसियत के साथ इस बात का ख़याल रखा जाए कि न तो बहुत ज़्यादह बारीक हो और न ही चुस्त, सादा और ढ़ीले-ढ़ाले कपड़े पहने।

चेहरे को खुला रखे, अगर पर्दा करना हो तो इस तरह कपड़ा लट्काएँ कि कपड़ा चेहरे को न लगे, जुराब और ज़ेवर पहन सकती हैं, दस्ताने पहनने जायज़ हैं मगर न पहनना बेहतर है। अगर एहराम के वक़्त औरत को हैज़ आ जाए तो वह ग़ुस्ल करे और एहराम बाँध ले और हर वह अ़मल करे जो दूसरे हाजी करते हैं। अलबत्ता तवाफ़ उस वक़्त तक न करे जब तक वह पाक न हो जाए। यही हुक्म रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी ज़ौजे मुतह्हरा हज़रत आईशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) को दिया था।

एहराम में जो चीज़ें मना हैं

एहराम बाँधने के बाद चन्द चीज़ें हराम और मम्नूअ़ हो जाती हैं।

(1) जिन कामों से अल्लाह ने रोका है उन से दूर रहें यानी बुरी और बेहयाई की बातों से, ग़ाली गलौज, जंग व जिदाल से और किसी को किसी भी तरह तक्लीफ़ पहुँचाने से।
(2) खाने-पीने की चीज़ों में ख़ुश्बू न इस्तिमाल करे।
(3) औरतों को शादी का पैग़ाम न दें, न अपने या किसी दूसरे के अक्द निकाह का सबब बने और जब तक एहराम में हो शहवत के साथ औरत से न बात करे और न हमबिस्तरी करे।
(4) जिमाअ़ करना, बोसा लेना और बेहयाई की बातें करना या मोबाइल व टी०वी० में देखना मना है।
(5) अल्लाह की नाफ़रमानी करना मना है।

(6) क़त्ल, झगड़ा, लड़ाई मना है।
(7) नाख़ून और बाल कट्वाना, सुर्मा और मुँह ढ़ापना मना है।
(8) सिले कपड़े जैसे कुर्ता, पैजामा, पगड़ी, टोपी, मोज़ह, बनियान, नेकर वग़ैरह पहनना मना है।
(9) ऐसा जूता जिससे पैर के ऊपर की हड्डी ढक जाए मना है। अल्बत्ता पैर की उंगलियाँ और एड़ी ढ़ांपने में कोई ह़र्ज नहीं।
(10) जुएँ मारना या जुएँ मारने के लिए कपड़े धूप में फैलाना मना है।
(11) खुश्की का शिकार करना या दूसरों को शिकार करने की तर्ग़ीब देना भी मना है।

एह़राम में जायज़ काम

बाज़ चीज़ें एह़राम बाँधने के बाद भी जायज़ रहती हैं। जैसे- मर्दों के लिए तकिया पर सर रखना, कपड़ों की गठरी या सन्दूक़ पर सर रखना, सर और दाढ़ी बिना ख़ुश्बू के साबुन से धोना, ग़ुस्ल करना मगर मैल कुचैल दूर न करना, न गर्म पानी और ठंडे पानी से गर्मी या ठंडक पहुँचाने की नियत से ग़ुस्ल करना। कमरबन्द पेटी या अँगूठी पहनना, सादा सुर्मा लगाना, सर खुजलाना बशर्ते कि बाल टूटने या नाख़ून गिरने का ख़ौफ़ न हो, कलाई पर घड़ी बांधना ऐनक लगाना। मस्नुई दाँत लगाना, टीका लगाना, दाँत निकलवाना, ज़ख़्म पर पट्टी बांधना, गले में या कंधे पर थैला लट्काना वग़ैरह यह तमाम उमूर ह़ालते एह़राम में जायज़ हैं।

इसी तरह़ मकान में दाख़िल हो सकते हैं, साये में बैठ सकते हैं, छत्री को साया बना सकते हैं मूज़ी जानवर जैसे खट्मल साँप और बिच्छू वग़ैरह मार सकते हैं, पालतू जानवर ज़ब्ह़ कर सकते हैं और उन का गोश्त भी खा सकते हैं।

एह़राम धोया और उस का पानी कहीं भी फेंका जा सकता है और बवक़्त ज़रूरत तब्दील भी किया जा सकता है। रंगदार एह़राम भी बांधा जा सकता है लेकिन सफ़ेद अफ़्ज़ल है।

तवाफ़

“बैतुलल्लाह शरीफ़ और ह़तीम के इर्द-गिर्द घूमने को तवाफ़ कहते हैं” एक तवाफ़ में सात चक्कर या शौत होते हैं। इस में तवाफ़ नियत करके ह़ज्रे अस्वद

से शुरु करके वहीं पर ख़त्म करते हैं।

तवाफ़ दो क़िस्म का होता है एक एह़राम में दूसरा सादा कपड़ों में।

तवाफ़ की नियत-

तवाफ़ की नियत ज़रूरी है बग़ैर नियत के तवाफ़ न होगा। अगर अ़रबी में नियत याद न रहे तो अपनी ज़बान में यूँ कहे।

“या अल्लाह! तवाफ़ की नियत करता हूँ। इस को मेरे लिए आसान कर दे और क़ुबूल फ़रमा”।

तवाफ़ के अरक़ान

तवाफ़ के तीन रुक्न हैं-
(1) तवाफ़ के अक्सर चक्कर पूरे करना।
(2) बैतुल्लाह के बाहर मस्जिद के अन्दर करना।
(3) ख़ुद से ही तवाफ़ करना चाहे किसी चीज़ पर सवार होकर ही करे मगर बेहोश इस से अलग है उस की तरफ़ से दूसरा शख़्स भी कर सकता है।

तवाफ़ की शर्तें

तवाफ़ की छः शर्तें हैं तीन तो केवल ह़ज के तवाफ़ों के लिए हैं और तीन सब तवाफ़ों के लिए।
(1) ख़ास वक़्त में। (2) तवाफ़ से पहले एह़राम का होना।
(3) वक़ूफ़े अ़रफ़ा का होना।

सब तरह़ के तवाफ़ों के लिए यह तीन शर्तें हैं-

(1) इस्लाम का होना।
(2) नियत का होना।
(3) मस्जिद के अन्दर होना।

तवाफ़ के वाजिबात

तवाफ़ के वाजिबात आठ हैं-
(1) तहारत का होना।

(2) सतर ढ़का होना

(3) जिसे पैदल तवाफ़ की क़ुद्रत हो पैदल तवाफ़ करना।

(4) दाहिनीं ओर से तवाफ़ शुरु करना।

(5) ह़तीम को शामिल कर के तवाफ़ करना।

(6) ह़ज्रे अस्वद से तवाफ़ की शुरुआ़त करना।

(7) पूरा तवाफ़ करना यानी अक्सर तवाफ़ रुक्न है और अक्सर से ज़्यादा वाजिब। तवाफ़ के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना बाज़ ने इस को अलग शुमार किया है।

नोट– अगर कोई वाजिब छोड़ेगा तो तवाफ़ दोहराना वाजिब होगा और अगर नहीं दोहराएगा तो उस की जज़ा वाजिब होगी जिसका ज़िक्र आगे होगा।

तवाफ़ की सुन्नतें

(1) ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम।

(2) इज़्तिबाअ़।

(3) शुरु के तीन चक्करों में रमल।

(4) बाक़ी में न करना।

(5) सअ़ी और तवाफ़ के दर्मियान इस्तिलाम करना (यह उसके लिए जो सअ़ी भी करे।)

(6) ह़ज्रे अस्वद के सामने खड़े होकर तक्बीर के वक़्त दोनों हाथ उठाना।

(7) ह़ज्रे अस्वद से तवाफ़ की शुरुआ़त करना (कुछ उ़लमा के यहाँ वाजिब और कुछ के यहाँ सुन्नत हैं।)

(8) शुरु तवाफ़ में ह़ज्रे अस्वद की तरफ़ मुँह करना।

(9) तमाम चक्कर लगातार करना।

(10) जिस्म और कपड़ों का नजासत से पाक होना।

तवाफ़ के मुस्तह़बात

(1) तवाफ़ को ह़ज्रे अस्वद के दायीं ओर से इस तरह़ शुरु करना कि तवाफ़ करने वाले का पूरा जिस्म ह़ज्रे अस्वद के सामने से गुज़रते हुए बढ़े।

(2) ह़ज्रे अस्वद पर तीन बार बोसा देना और तीन बार सर रखना।

(3) तवाफ़ करते हुए दुआ़एँ पढ़ना।

(4) मर्द को बैतुल्लाह के क़रीब होकर तवाफ़ करना बशर्त कि किसी को तक्लीफ़ न हो।

(5) औ़रत को रात में तवाफ़ करना।

(6) तवाफ़ में ह़तीम को शामिल करना।

(7) अगर तवाफ़ बीच में छोड़ दिया हो तो शुरु से करना।

(8) मुबाह़ गुफ़्तगू छोड़ देना।

(9) जो चीज़ खुज़ू में रुकावट डालें उस को न करना।

(10) दुआ़ और ज़िक्र को आहिस्ता पढ़ना।

(11) रुक्न यमानी का इस्तिलाम करना।

(12) जो चीज़ें दिल को मश्गूल करने वाली हों उन से नज़र को बचाना।

तवाफ़ में मुबाह़ चीज़ें

तवाफ़ में सलाम करना, छींक का जवाब देना, शरअ़ी मस्ला बताना या पूछना, किसी ज़रूरत से कलाम करना, कुछ पीना, दुआ़ओं को छोड़ देना, अच्छा शेअ़र पढ़ना, पाक जूते पहन कर तवाफ़ करना, उ़ज्र की वजह से सवार होकर तवाफ़ करना, दिल-दिल में क़ुर्आन पढ़ना।

तवाफ़ में ह़राम चीज़ें

(1) नापाकी या हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में तवाफ़ करना।

(2) बिना उ़ज्र के सवार होकर तवाफ़ करना।

(3) बेवुज़ू तवाफ़ करना।

(4) तवाफ़ करते हुए ह़तीम के बीच से निकलना।

(5) तवाफ़ का कोई चक्कर या उस से कम छोड़ देना।

(6) ह़ज्र अस्वद के अ़लावा और किसी जगह से तवाफ़ शुरु करना।

(7) तवाफ़ में बैतुल्लाह की ओर मुँह करना।

(8) मगर शुरु तवाफ़ में ह़ज्र अस्वद के इस्तिक़बाल के वक़्त जायज़ है।

(9) तवाफ़ में जो चीज़ें वाजिब हैं उनमें से किसी को छोड़ देना।

तवाफ़ की मकरुह़ चीज़ें

(1) फ़ुज़ूल बात करना।
(2) ख़रीद फ़रोख़्त या उस की बात करना।
(3) दुआ़ या क़ुर्आन बुलन्द आवाज़ से पढ़ना जिस से तवाफ़ करने वालों और नमाज़ियों को तश्वीश हो।
(4) रमल और इज़्तिबाअ़ को बिना उ़ज्र के छोड़ देना।
(5) तवाफ़ के फेरों में ज़्यादा फ़ासला करना।
(6) दो तवाफ़ इस तरह़ इकट्ठे करना कि दो रकअ़त नमाज़ तवाफ़ बीच में न पढ़े।
(7) लेकिन अगर नमाज़ पढ़नी उस वक़्त मकरुह़ हो तो जायज़ है।
(8) दोनों हाथ तवाफ़ की नियत के वक़्त बिना तक्बीर के उठाना।
(9) ख़ुत्बा और फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त खड़ी हो जाने के वक़्त तवाफ़ करना।
(10) तवाफ़ के दर्मियान खाना खाना।
(11) बाज़ ने पीने को भी मकरुह़ कहा है।
(12) पेशाब पाखाना के तक़ाज़ा के बावजूद तवाफ़ करना।
(13) तवाफ़ करते हुए नमाज़ की तरह़ हाथ बाँधना।
(14) और किसी के कूल्हे या गर्दन पर हाथ रखना।

तवाफ़ की क़िस्में

तवाफ़ की सात क़िस्में हैं-

(1) तवाफ़ क़ुदूम- यानी आने के वक़्त का तवाफ़ इसको 'तवाफ़ तह़ीय्या' और 'तवाफ़ुल्लिका' भी कहते हैं यह उस 'आफ़ाक़ी' (बाहर से आने वाले) के लिए सुन्नत है जो सिर्फ़ ह़ज़ या किरान करे और तमत्तोअ़ और उ़मरह करने वाले के लिए सुन्नत नहीं चाहे आफ़ाक़ी ही क्यों न हो। इसी तरह़ यह अहले मक्का वालों के लिए भी नहीं है। हाँ, अगर कोई मक्की मीक़ात से बाहर जाकर इफ़राद या किरान का एह़राम बाँधकर ह़ज करे तो उसके लिए भी मस्नून है और इस का अव्वल वक़्त मक्का में दाख़िल होने का वक़्त है।

(2) तवाफ़े ज़ियारत- इस को 'तवाफ़े रुक्न' और 'तवाफ़े ह़ज' और 'तवाफ़े फ़र्ज़' भी कहते हैं। यह ह़ज का रुक्न है बिना इस के ह़ज पूरा नहीं होगा। इस का वक़्त दस्वीं ज़िल्ह़िज्जा की सुबह़ सादिक़ से शुरु होता है और बारहवीं तक करना वाजिब है। इस में रमल होता है और सिले कपड़े, अगर एह़राम के बाद पहन लिए तो इज़्तिबाअ़ नहीं होगा और अगर एह़राम के कपड़े नहीं उतारे तो फिर इज़्तिबाअ़ करना होगा उस के बाद सअ़ी भी होती है, लेकिन तवाफ़े क़ुदूम के बाद सअ़ी कर चुका हो तो फिर रमल और सअ़ी नहीं करेगा।

(3) तवाफ़े सद्र- बैतुल्लाह से वापसी का तवाफ़ इस को तवाफ़े विदअ़ भी कहते हैं, यह आफ़ाक़ी पर वाजिब है। मक्की पर या जो ख़ारिजी मक्का को हमेशा के लिए वतन बनाये उस पर वाजिब नहीं। इस तवाफ़ में रमल व इज़्तिबाअ़ नहीं है, न इस के बाद सअ़ी, यह तीनों तवाफ़ ह़ज के साथ ख़ास हैं।

(4) तवाफ़े उ़मरह- यह उ़मरह में रुक्न और फ़र्ज़ है। इस में इज़्तिबाअ़ और रमल करें और बाद में सअ़ी भी करें।

(5) तवाफ़े नज़्र- यह नज़्र मानने वाले पर वाजिब होता है।

(6) तवाफ़े तह़ीय्या- यह मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होने वाले के लिए मुस्तह़ब है, लेकिन अगर कोई दूसरा तवाफ़ कर लिया तो वह उस के क़ायम मक़ाम हो जाएगा।

(7) तवाफ़े नफ़्ल- यह जब जी चाहे कर सकता है।

नोट- तवाफ़ के वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कोई ख़ास दुआ़ साबित नहीं। तवाफ़ करते वक़्त तल्बिया न कहे, अगर कोई दुआ़ याद हो तो पढ़े वरना जो ज़िक्र चाहे करता रहे। रुक्न यमानी के और ह़ज्रे अस्वद के दर्मियान रब्बना आतिना............पढ़ना रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित है और तवाफ़ के वक़्त यह दुआ़ भी साबित है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالعفْوَ عِنْدَ الحِسَابِ۔

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकर्राह़ता इन्दल् मौति वल्अफ़्व

इन्दल् मौति वल्अ़फ़्वा इन्दल् ह़िसाब”

इस तरह़ और भी कुछ दुआ़एँ साबित हैं, मगर कोई लाज़िमी हुक्म नहीं है।

नफ़्ली तवाफ़ का वक़्त–

नफ़्ली तवाफ़ हर वक़्त होता है इस में एह़राम की ज़रूरत नहीं। यह मक्का मुकर्रमा के क़याम की सबसे अफ़ज़ल नफ़्ली अ़िबादात है। जब भी ह़रम शरीफ़ जाये कअ़बः का तवाफ़ करे।

तवाफ़ करने का तरीक़ा

मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होकर सीधा ह़ज्रे अस्वद की तरफ़ जाए और तल्बिया बंद कर के इज़्तिबअ़ करे यानी दाहिने बगल के नीचे से चादर निकाल कर कंधे पर डाल ले, उस को बोसा दे और दिल में नियत करे और ज़बान से यह पढ़ें:–

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ طَوَافَ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فَيَسِّرْهُ لِىْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّىْ

फिर दोनों हाथ उठाये और यह दुआ़ पढ़ें–

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ
وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ
اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَآءً
بِعَهْدِكَ وَاِتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

“बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर लाइलाहा इल्लल्लाहु वलिल्लाहिल् ह़म्दु वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मा ईमानन बिका वतस्दीक़न बिकिताबिका ववाफ़ाअन बिअ़ह्दिका वइत्तिबाअ़न लिसुन्नति नबीय्यिका मुह़म्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम”।

“ऐ अल्लाह! मैं आप के हुक्म की तअ़मील आप के किताब की तस्दीक़ और आप के अ़हद को पूरा करने और आप के रसूल (सल्ल०) के इत्तिबाअ़ के लिए इस पत्थर को छूता और चूमता हूँ”।

इस के बाद हाथ छोड़कर ह़ज्रे अस्वद पर आये और दोनों हाथ हज्र अस्वद पर रख कर मुँह को दोनों हाथों के बीच में रखकर बोसा दे, लेकिन आहिस्ता बोसा दे। अगर भीड़ हो तो सिर्फ़ दोनों हाथ ह़ज्रे अस्वद को लगाए और हाथों को चूम ले और अगर यह भी मुम्किन न हो तो किसी लकड़ी वग़ैरह से ह़ज्रे अस्वद को छुए और उस लकड़ी को बोसा दे। अगर यह भी न हो सकें तो दोनों हथेलियों को हज्रे अस्वद की ओर इस तरह़ करे कि पुश्त हथेलियों की अपने चेहरे की तरफ़ रहे और यह नियत करे कि ह़ज्रे अस्वद पर रखा है फिर तक्बीर व तह़लील कहे और हथेलियों को बोसा दे ले।

उस के बाद दाहिनीं ओर यानी बैतुल्लाह के दरवाज़े की तरफ़ चले और बैतुल्लाह बाएँ मोंढ़े की ओर रहे।

जब ‘रुक्न यमानी’ पर पहुँचे तो उस का इस्तिलाम करे यानी दोनों हाथ या सिर्फ़ दाहिना हाथ उस को लगाए मगर बोसा न दे और उस पर पेशानी आदि न रखे फिर जब ह़ज्रे अस्वद पर आए तो ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करे। जैसे–पहली बार किया था, लेकिन हाथ तक्बीर कहने की तरफ़ न उठाये हाथ सिर्फ़ पहली बार उठाये जाते हैं और हर मर्तबः सिर्फ़ इस्तिलाम करें।

इसी तरह़ सात चक्कर पूरे करे, पहले तीन चक्कर में रमल करे (अर्थात अकड़ कर चले) बाक़ी चार चक्करों में अपनी रफ़्तार से चले। इस तरह़ सातवें शौत के बाद आठवीं बार फिर ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करे। अब एक तवाफ़ पूरा हो गया।

- उस के बाद दो रकअ़त वाजिब तवाफ़ मक़ामे इब्राहीम के पीछे या जहाँ जगह मिले पढ़े जिसमें पहली रकअ़त में “कुल् या अय्युहल् काफ़िरून” और दूसरी रकअ़त में “कुलहुवल्लाहु अ़हद” पढ़े, उस के बाद जो चाहे दुआ़ माँगे:–
- फिर ज़मज़म पर जाकर ज़मज़म पिये और दुआ़ माँगे।
- फिर वहाँ से आकर ह़ज्रे अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दर्मियान की दीवार (मुल्तज़िम) से लिपट कर दुआ़ करे।
- फिर जिस तवाफ़ के बाद सअ़ी हो तो तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करे और यह अब नवां इस्तिलाम होगा जो मुस्तह़ब है। इस्तिलाम

करके बाबुस्सफ़ा से मस्जिद से बाहर निकले और सफ़ा पर जाए और यह दुआ़ पढ़े-

اَبْدَءُ بِمَا بَدَءَ اللّٰهُ بِهٖ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ

"अब्दअु बिमा बदाअल्लाहु बिही इन्नस्सफ़ा वल् मरवता मिन शआ़इरिल्लाह"

"जिससे अल्लाह ने इब्तिदा की मैं उसी से शुरु करता हूँ" बेशक सफ़ा व मरवह अल्लाह की निशानियों में से है।

फिर सफ़ा पर चढ़े, फिर बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो और बैतुल्लाह पर नज़र रखते हुए दोनों हाथ आसमान की तरफ़ मोंढ़ों तक उठाये जैसे दुआ़ में उठाते हैं। उस के बाद तीन बार अल्लाह की ह़म्द व सना करे और तक्बीर भी बुलन्द आवाज़ से तीन बार कहे-

"अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल् ह़म्द" और लगभग पच्चीस आयत पढ़ने के बराबर ठहरे फिर अपनी रफ़्तार में ज़िक्र व दुआ़ माँगते हुए मरवह़ की तरफ़ चले और सफ़ा व मरवह के दर्मियान यह दुआ़ पढ़े:-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ

"रब्बिग़फ़िर वरह़म अन्तल्अअज़्ज़ुल्अकरम"

"ऐ अल्लाह! बख़्श दे आप ही सब से ज़्यादह इ़ज़्ज़त वाले और सबसे बुर्ज़ुग हैं"।

इसके अ़लावह जो चाहे पढ़े और जब हरी लाइट की जगह आ जाए तो तेज़ चले, मगर दर्मियानी चाल चले। जब दोनों हरी लाइट से निकल जाये तो फिर अपनी चाल से चलने लगे यहाँ तक कि मरवह पर पहुँचे और थोड़ी देर रुक जाये और दाहिनीं ओर को मायल होकर बैतुल्लाह की ओर मुँह करके खड़ा हो और फिर जिस तरह़ सफ़ा पर ज़िक्र और दुआ़ की थी यहाँ भी करे। यह सफ़ा से मरवह़ तक एक चक्कर हो गया।

● उस के बाद मरवह़ से उतरकर फिर सफ़ा की तरफ़ चले और दूसरी तरफ़ भी दोनों मीलों (हरी लाइट) के दर्मियान दौड़ कर चले और सफ़ा पर चढ़कर फिर

उसी तरह़ दुआ़ और ज़िक्र करे, जैसे शुरु में किया था, यह मरवह़ से सफ़ा तक दो फेरे हुए।

● इसी तरह़ सात फेरे करे फिर सअ़ी के सात फेरे पूरे करने के बाद दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ मस्जिदे ह़राम में चाहे तो पढ़े।

नोट- सअ़ी हमारे यहाँ वाजिब है, तवाफ़ के तुरन्त बाद करना सुन्नत है तुरन्त करना वाजिब नहीं, मगर बिना उ़ज़्र के मकरुह़ है।

सअ़ी का रुक्न

सअ़ी में सफ़ा व मरवह के दर्मियान चलना रुक्न है। अगर इन दोनों के दर्मियान सअ़ी नहीं की बल्कि इधर-उधर की तो सअ़ी न होगी।

सअ़ी की शर्तें

सअ़ी की छः शर्तें हैं-

(1) खुद सअ़ी करना चाहे किसी चीज़ पर चढ़कर करे, सअ़ी की नियाबत जायज़ नहीं, मगर यह कि एह़राम से पहले कोई शख़्स बेहोश हो गया हो तो उस की ओर से दूसरा शख़्स सअ़ी कर सकता है, बशर्ते कि सअ़ी के वक़्त तक होश न आया हो।

(2) दूसरी शर्त यह है कि सअ़ी पूरा तवाफ़ या अक्सर तवाफ़ करने के बाद हो चाहे तवाफ़ नफ़्ल ही हो और चाहे तवाफ़ बह़ालत पाकी किया गया हो या नापाकी, अगर कोई तवाफ़ से पहले या चार फेरे करने से पहली सअ़ी करेगा तो सअ़ी न होगी और अगर तवाफ़ के चार फेरे करने के बाद करेगा तो सही हो जाएगी।

(3) तीसरी शर्त एह़राम ह़ज या उ़मरह़ की सअ़ी से पहले करना। अगर कोई एह़राम से पहले सअ़ी करेगा तो सह़ी न होगी चाहे तवाफ़ के बाद हो और एह़राम का बाक़ी रहना सअ़ी तक ज़रूरी नहीं बल्कि इस में इस सअ़ी की तफ़्सील है कि अगर ह़ज की सअ़ी करता है और उक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले करता है तो एह़राम का होना सअ़ी के वक़्त शर्त है और अगर उ़क़ूफ़ के बाद सअ़ी करता है तो एह़राम का बाक़ी रहना शर्त नहीं बल्कि एह़राम का

न होना मस्नून है और अगर सअ़ी उ़मरह की है तो एह़राम का रहना शर्त नहीं मगर वाजिब है। अगर तवाफ़ के बाद सर मुँडा के सअ़ी करे तो दम वाजिब होगा और सअ़ी सही हो जाएगी।

(4) चौथी शर्त सफ़ा से शुरु करना और मरवह़ पर ख़त्म करना है। अगर मरवह से किसी ने शुरु किया तो यह फेरा शुमार न होगा बल्कि सफ़ा से लौट कर आएगा तो सअ़ी शुरु होगी और सात चक्कर उस फेरे के अ़लावह करने होंगे जो मरवह से शुरु किया था।

(5) पाँचवीं शर्त अक्सर ह़िस्सा सअ़ी का करना। अगर अक्सर नहीं किया तो सअ़ी न होगी।

(6) छठी शर्त सअ़ी के वक़्त में सअ़ी करना यह ह़ज के सअ़ी की शर्त है। उ़मरह के सअ़ी की शर्त नहीं, लेकिन कारिन या मुतमत्तेअ़ उ़मरह करे तो उस के उ़मरह की सअ़ी के लिए भी यह वक़्त शर्त है और ह़ज की सअ़ी का वक़्त ह़ज के महीनों से शुरु हो जाना है। ह़ज के महीनों के अन्दर सअ़ी करना शर्त नहीं, मगर सअ़ी को ह़ज के महीनों से ताख़ीर करना मकरुह़ है।

सअ़ी के वाजिबात

(1) सअ़ी का ऐसे तवाफ़ के बाद होना जिसे जनाबत और हैज से पाक होने की ह़ालत में किया हो।

(2) सअ़ी सफ़ा से शुरु करना और मरवह पर ख़त्म करना।

(3) पैदल सअ़ी करना अगर कोई उ़ज़्र न हो। अगर बिना उ़ज़्र के कोई शख़्स सवार होकर सअ़ी करेगा तो दम वाजिब होगा।

(4) सात फेरे पूरे करना यानी चार फेरे तो फ़र्ज़ हैं और उस के बाद तीन फेरे वाजिब। अगर किसी ने तीन फेरे छोड़ दिये तो सअ़ी हो जाएगी, लेकिन हर फेरे के बदले में आधा साअ़ गेहूँ या उस की क़ीमत सद्क़-ए-फित्र के बराबर सद्क़ः देना वाजिब होगा।

(5) उ़मरह की सअ़ी में उ़मरः का एह़राम आख़िर सअ़ी तक बाक़ी रहना।

(6) सफ़ा और मरवह के दर्मियान पूरी मुसाफ़त तय करना।

सअ़ी की सुन्नतें

(1) ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करके सअ़ी के लिए मस्जिद से निकलना।

(2) तवाफ़ के बाद तुरन्त सअ़ी करना।

(3) सफ़ा और मरवह़ पर चढ़ना।

(4) सफ़ा और मरवह़ पर चढ़कर क़िब्ला-रु-होना।

(5) सअ़ी के फेरों को लगातार करना।

(6) जनाबत और हैज़ से पाक होना।

(7) सअ़ी ऐसी ह़ालत में हो कि कपड़े बदन और तवाफ़ की जगह पर कोई निजासत न हो या वुज़ू भी किया हो।

(8) मीलैन अखजरैन के दर्मियान तेज़ चलना।

(9) सतर औ़रत (जिस्म ढ़का) का होना।

सअ़ी के मुस्तह़बात

(1) नियत करना।

(2) सफ़ा और मरवह़ पर देर तक ठहरना।

(3) ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ से ज़िक्र और दुआ़एँ तीन-तीन बार पढ़ना।

(4) सअ़ी के फेरों में अगर बिना उ़ज़्र के ज़्यादा फ़ासला हो जाये या किसी फेरे में कुछ वक्फ़ा हो जाए तो नये सिरे से कर ले कि सअ़ी को शुरु से करना उस वक़्त मुस्तह़ब है, जबकि अक्सर फेरे न हुए हों।

(5) सअ़ी के बाद मस्जिद में आकर दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ना, मरवह पर इन नफ़्लों को पढ़ना मकरुह है।

मकरुह़ात सअ़ी

ख़रीद व फ़रोख़्त और ऐसी बातचीत जो मश्गूल कर दे, सअ़ी के फेरे लगातार न करना और सफ़ा व मरवह पर न चढ़ना, सअ़ी को बिना उ़ज़्र के ताख़ीर करना या अय्यामे नहर से मुवख़्ख़र करना, सतर खोलना, फेरों में बहुत फ़ासला करना।

बाल कट्वाना और एह्राम खोलना

सफ़ा और मरवह की सई के बाद आप बाल मुंडवा लें या कट्वा लें चौथाई सर का ह्लक़ या बाल छोटे करवाना वाजिब है, उस के बाद अगर हो सके तो दो नफ़्ल पढ़ ले या नहा धो कर मामूल के मुताबिक़ कपड़े पहन ले यह उ़मरह मुकम्मल हो गया।

औ़रत को बाल मुंडवाना जायज़ नहीं है उसे उंगली के पोर के बराबर बाल कट्वाने चाहिए। इस से ज़्यादा कट्वाना दुरुस्त नहीं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ़ओं का तर्जुमः-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अ़रफ़ात में यह दुआ़ माँगी जिसका तर्जुमः इस तरह् है-

"अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह ही के लिए सब तअ़रीफ़ हैं। अल्लाह ही के लिए सब तअ़रीफ़ हैं अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। हुकूमत और सब तअ़रीफ़ उसी के लिए हैं। ऐ अल्लाह! मुझे सीधी राह दिखा और मुझे गुनाहों से पाक कर दे और तक़्वा को मज़बूती से पकड़ने वाला बना और मुझे दुनिया व आख़िरत में बख़्श दे। ऐ अल्लाह! मेरे इस ह्ज को मक़्बूल फ़रमा और गुनाह को बख़्शा हुआ बना दे।

➢ ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़, मेरी अ़िबादत व क़ुर्बानी, मेरी ज़िन्दग़ी और मौत तेरे ही लिए है और आख़िरकार मेरा ठिकाना भी तेरी ही तरफ़ है। ऐ अल्लाह! क़ब्र के अ़ज़ाब से, दिल के वस्वसों से और मामलात की परेशानी से तेरी पनाह चाहता हूँ।

➢ ऐ अल्लाह! हिदायत के साथ हमारी रहनुमाई फ़रमा और हमें परहेज़गारी के साथ आरास्ता कर और हमें दुनिया व आख़िरत में बख़्श दे। ऐ अल्लाह! तूने मुझे दुआ़ करने का हुक्म फ़रमाया है और क़ुबूल करना तेरे अख़्तियार में है और तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

➢ ऐ अल्लाह! तू जिस भलाई को अच्छा समझता है उस को हमारे लिए महबूब

बना और उस को हमारे लिए आसान कर दे और जिस बुराई को तू मकरुह समझता है उस को हमारे लिए क़ाबिले नफ़रत बना दे और हमें उस से दूर रख, और हिदायत देने के बाद हम से इस्लाम न छीन, और उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं। उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तअ़रीफ़ है वही ज़िन्दा करता और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

➢ ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और मेरे मामलात को आसान कर दे और मैं सीने के वस्वसों से मामलात की ख़राबी और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ उस चीज़ के शर से जो रात में दाख़िल होती है, और उस चीज़ के शर से जो दिन में दाख़िल होती है, और उस चीज़ के शर से जिस को हवाएँ उड़ाती हैं और ज़माने के ह्वादिस के शर से, ऐ अल्लाह हमें दुनिया और आख़िरत में भलाई अ़ता कर और आग के अ़ज़ाब से बचा।

➢ ऐ अल्लाह! मैं तुझ से भलाई चाहता हूँ जो तुझ से मेरे नबी (सल्ल०) ने मांगी है। ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रह्म नहीं करेगा तो हम ख़सारा उठाने वाले होंगे।

➢ ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना दे और मेरी औलाद को भी ऐ मेरे परवरदिगार हमारी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा, ऐ हमारे रब बख़्श दे मुझे और मेरे माँ बाप और मोमिनों को जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी।

➢ ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे वालिदैन पर रह्म फ़रमा जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला है। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाईयों को भी बख़्श दे जो हम से पहले ईमान के साथ गुज़र चुके हैं और ईमान वालों के मुतअ़ल्लिक़ हमारे दिल में कीना न डाल।

➢ ऐ हमारे परवरदिग़ार! बेशक तू मेहरबान, रह्म करने वाला है। ऐ हमारे रब! बेशक तू सुनने और जानने वाला है और तौबः क़ुबूल करके हम पर रुजूअ़ कर, बेशक तू तौबः क़ुबूल करने वाला और बड़ा मेहरबान है। नहीं है ताक़त नेकी की और न गुनाह से बचने की सिवाय अल्लाह तआ़ला की मदद के जो बुलन्द शान और अ़ज़्मत वाला है।

➢ ऐ अल्लाह! बेशक तू जानता है और मेरी क़यामगाह को देखता है, और मेरे कलाम को सुनता है, और मेरे ज़ाहिर और बातिन को जानता है, और मेरे कामों में से कोई चीज़ भी तुझ से पोशीदा नहीं है, और मैं निहायत मुफ़्लिस फ़रियाद करने वाला एक फ़क़ीर हूँ। मैं पनाह चाहने वाला डरने वाला, अपने गुनाहों का एतिराफ़ करने वाला और इक़रार करने वाला हूँ।

मैं तुझ से मिस्कीन फ़क़ीर की तरह सवाल करता हूँ और एक ज़लील गुनाहगार की तरह़ तेरे सामने पुकारता हूँ और तुझ से दुआ़ माँगता हूँ एक डरने वाले अंधे की तरह जिसकी गर्दन तेरे लिए झुकी हुई हो और उसकी आँखें आँसू बहाती हों और जिस का जिस्म तेरी याद में लाग़र हो गया हो, और उस की नाक तेरे लिए ख़ाक आलूद हो गई हो।

➢ ऐ अल्लाह! मुझे अपने सामने दुआ़ माँगने से बद्‌नसीब न करना और तू मेरे ह़क़ में मेहरबान रह़म करने वाला बन जा। और ऐ सब बख़्शिश करने वालों से बेहतर, ऐ रह़म करने वालों से बेहतर, ऐ रह़म करने वालों में सब से बढ़कर रह़म करने वाले और सब तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का पालने वाला है। (इलाही क़ुबूल फ़रमा)

तवाफ़े विदाअ़–

ह़ज या उ़मरा से फ़ारिग़ होकर जब वापसी के सफ़र का इरादा हो तो तवाफ़े विदाअ़ इस तरह़ करे कि उस में रमल न करे और उस के बाद सअ़ी भी न करे। तवाफ़ के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े और क़िब्ला रुख़ खड़ा होकर ख़ूब पेट भर आबे ज़मज़म पिये। फिर बैतुल्लाह के दरवाज़े के पास जाकर उस से लिपटे, सीना और दाहिना रुख़सार मुल्तज़िम को लगाकर दाहिना हाथ ऊपर को उठा कर बैतुल्लाह का दरवाज़ा पकड़े जैसा कि कोई ग़ुलाम और ख़ादिम अपने आक़ा का दामन पकड़ता है और ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़ करे फिर ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करे और बैतुल्लाह की तरफ़ हसरत की निगाह से देखता हुआ मस्जिद से बाहर निकले, अगर यह सब किसी को तक्लीफ़ पहुँचाए बग़ैर कर सकता है तो करे वरना तवाफ़ करके नमाज़ पढ़े और दुआ़ कर के वापस चला आये फिर

यह दुआ़ पढ़ेः-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِى الْعَوْدَ بَعْدَ الْعَوْدِ الْمَرَّةَ بَعْدَ الْمَرَّةِ اِلٰى بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ عِنْدَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۔ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَاِنْ جَعَلْتَهٗ اٰخِرَ الْعَهْدِ فَعَوِّضْنِىْ عَنْهُ الْجَنَّةَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔

अल्ह़म्दु लिल्लाहि ह़म्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीही। अल्लाहुम्मरज़ुक़नी अल् औ़दा बअ़दल औ़दि अल् मर्रता बअ़दल मर्रता इला बैतिकल ह़रामी वजअ़लनी मिनल् मक़्बूह़ीन इ़न्दका या ज़ल्जिलालि वल् इकराम। अल्लाहुम्मा ला तजअ़लहु आख़िरल् अ़हदी मिन बैतिकल ह़राम वइन जअ़लतहु आख़िरल अ़हदी फ़अव्विसना इ़न्हुल जन्नता या अरह़मुर्राह़िमीन वसल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िहि मुहम्मदिवं वआलिही वसह़बिही अज्मईन।

तर्जुमः– “तमाम पाक बाबरकत व इफ़्राद किफ़ायत करने वाली तअ़रीफ़ें सब अल्लाह तआ़ला के लिए हैं। ऐ अल्लाह! मुझ को (ह़ज से) वापसी के बाद फिर बैतुल्लाह की जानिब बार-बार आने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और ऐ ज़ुल् जलाल वल् इकराम मुझे मक़्बूल बन्दों में से बना ले। ऐ अल्लाह! तू बैतुल्लाह की उस ज़ियारत को मेरे लिए आख़िरी ज़ियारत न बना और अगर यह आख़िरी ज़ियारत है तो ऐ अर्रह़मुर्राह़िमीन! तू मुझे इस के बदले जन्नत अ़ता फ़रमा और रह़मत कामिला नाज़िल फ़रमा बेहतरीन मख़्लूक़ मुह़म्मद (सल्ल०) पर और उस की तमाम आल व औलाद पर”।

भाग-4

जिनायात

जिनायात (तावान या जुर्माना)

इस के माने ख़ता और कुसूर के हैं। मक़्सद यह है कि कोई ऐसा काम करना जो ह़ालते एह़राम में मम्नूअ़ हो। जैसे- सिले हुए कपड़े पहनना सर और चेहरा ढांपना, नाख़ून काटना, बाल साफ़ करना, ख़ूशबू इस्तेमाल करना, जिमाअ़ (सम्भोग) करना, खुश्की के जानवर का शिकार करना वाजिबाते ह़ज में से कोई वाजिब छोड़ देना। इन में से कोई ख़ता व कुसूर हो जाए तो उस की जज़ा वाजिब है।

दम-

मनासिके ह़ज अदा करने में अगर किसी क़िस्म की ख़ता हो जाए तो कोई जानवर ज़ब्ह़ करने को दम कहते हैं। जैसे- भेड़, बकरी या गाय और ऊँट आदि।

बुद्ना-

अगर किसी औ़रत ने हैज़ या निफ़ास की ह़ालत में तवाफ़े ज़ियारत कर लिया या किसी ह़ाजी ने वक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद और बाल कट्वाने से पहले जिमाअ़ कर लिया या किसी ह़ाजी ने वक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद और बाल कट्वाने से पहले जिमाअ़ कर लिया तो पूरा ऊँट या पूरी गाय ज़ब्ह़ करना 'बुद्ना' कहलाता है। यह बड़ा जुर्म है, इसलिए तावान भी बड़ा है।

सद्क़ा-

छोटे मोटे कुसूर और ख़ता पर सद्क़ा ही काफ़ी है। यह सद्क़ा आधा साअ़ गेहूँ या एक साअ़ जौ अदा करना पड़ता है। एक साअ़ साढ़े तीन सेर के बराबर होता है।

मक्का के तारीख़ी मक़ामात

1- मूलिदे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम-

यह वह मक़ाम है जहाँ सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की

विलादत हुई। यहाँ अब सऊदी हुकूमत ने एक लाइब्रेरी क़ायम कर दी है। सफ़ा और मरवह से बाहर खड़े होकर पहाड़ की जानिब देखें तो एक छोटा सा मकान नज़र आएगा यही मूलिदे नबवी (सल्ल०) है।

2- जन्नतुल मअ़ला–

यह मक्का मुकर्रमा का क़दीमी क़ब्रस्तान है। इस मुक़द्दस क़ब्रस्तान में उम्मुल् मोमिनीन ह़ज़रत ख़दीजतुल् कुबरा (रज़ि०) ह़ज़रत अस्मां (रज़ि०) बिन्त अबी बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०)। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दादा जनाब अ़ब्दुल् मुत्तलिब और चचा जनाब अबू तालिब ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ह़ज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़ब्बास (रज़ि०)।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) क़ासिम (रज़ि०) बिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) की क़ब्रें हैं। इन के अ़लावा बेशुमार ताबिअ़ीन और औलिया अल्लाह दफ़न है।

3- जबलेनूर–

इसको 'कोहे ह़िरा' भी कहते हैं। जन्नतुल् मअ़ला क़ब्रस्तान से आगे मिना को जाते हुए रास्ते में मक्का से तक़रीबन तीन मील की दूरी पर है। उस की चोटी पर वह ग़ार है जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) एलाने नुबूव्वत से पहले एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और यहीं आप (सल्ल०) पर पहली वह़्य नाज़िल हुई थी। इस को फ़ारान की चोटी भी कहते हैं।

4- जबले सौर–

मक्का मुकर्रमा से तक़रीबन छः मील दूर यह पहाड़ी है जिस के एक ग़ार में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हिजरत के मौक़े पर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के साथ क़याम फ़रमाया था।

5- मस्जिदे तुवा–

जन्नतुल् मअ़ला क़ब्रस्तान से आगे यह मस्जिद है। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उ़मरह अदा फ़रमाया था तो यहीं ठहरे थे।

6- मस्जिदे जिन्न–

यह मस्जिद सूके मअ़ला में क़ब्रस्तान के क़रीब है। इस का नाम मस्जिदे बैत और मस्जिदे ह़िर्स भी है। यहीं नबी करीम (सल्ल०) ने जिन्नों से बैअ़त ली थी।

7- मस्जिदे आ़इशा–

यह मस्जिद 'तनअ़ीम' में है जहाँ से उ़मरह करने वाले ह़ाजी और मक्का के रहने वाले उ़मरह के लिए एह़राम बाँधते हैं।

भाग-5

मदीना मुनव्वरह
और
मस्जिदे नबवी में दाख़िला का तरीक़ा

मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में दाख़िला का तरीक़ा

1- मदीना मुनव्वरह या फिर मस्जिदे नबवी में दाख़िल होने से पहले ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है वरना वुज़ू करे।

2- पहले मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की नियत करे, फिर यहाँ आकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ब्र की ज़ियारत की भी नियत करे।

3- मस्जिद में दाख़िला की दुआ़ पढ़े।

4- बाब जिब्रईल से दाख़िल होना बेहतर है लेकिन यह आ़मतौर से बन्द रहता है।

5- मेम्बर और क़ब्र के दर्मियान दो रकअ़त नमाज़ तह़ीय्यतुल मस्जिद पढ़े जिसमें पहली रकअ़त में 'कुल या अय्युह़ल काफ़िरूना और दूसरी में 'कुल हुवल्लाह पढ़े यह नमाज़ मेहराब में पढ़ना अफ़्ज़ल है।

6- अब सलाम के लिए जाए और सलाम पढ़े दूसरों का भी सलाम पहुँचाए।

7- फिर एक हाथ दाहिनीं तरफ़ आए और ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को सलाम करे फिर एक हाथ आगे आए और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को सलाम करे और इन ह़ज़रात को भी दूसरों का सलाम पहुँचाए।

8- फिर दोबारह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने आये और ह़म्दो सना दुरुद के बाद बाहर निकल कर क़अ़बः की तरफ़ मुँह कर के दुआ़ करे।

9- फिर जन्नतुल बक़ीअ़ की ज़ियारत के लिए जाये मगर जुमअ़ के दिन सुन्नत है इसमें पहले ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के क़ब्र की ज़ियारत करे, फिर ह़ज़रत इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ब्र की फिर तमाम सह़ाबा-ए-किराम की क़ब्रों की ज़ियारत करे।

10- फिर मस्जिदे क़ुबा की ज़ियारत के लिए जाये जिसमें सनीचर को जाना मुस्तह़ब है। यहाँ एक उ़मरे का सवाब मिलता है बाक़ी और तारीख़ी चीज़ों की भी ज़ियारत की जा सकती है।

11- रियाज़ुल जन्नह में औ़रतों के जाने का वक़्त फ़ज्र बाद से 11 बजे तक, फिर ज़ुह्र के बाद से साढ़े तीन बजे तक फिर अ़िशा के बाद से रात 12 बजे तक रहता है।

12- अगर बाब सिद्दीक़ से जाकर बैठ जाये तो रियाज़ुल जन्नह में जाना आसान हो जाता है।

13- हमारा मामूल था कि ह़रम तहज्जुद के वक़्त आते और सुबह़ आठ बजे सलाम कर के इशराक़ पढ़कर कमरे चले जाते और खाना खाकर एक घंटा आराम कर के 10 बजे फिर आ जाते और साढ़े ग्यारह बजे बाब सिद्दीक़ से अन्दर जाते रियाज़ुल् जन्नह में या उसके आस-पास और फिर ज़ुह्र बाद बाहर आ जाते या पहली सफ़ में बाबुस्सलाम से जाकर अन्दर बैठते। फिर अ़स्र से पहले सलाम कर के ढ़ाई बजे बाब सिद्दीक़ की तरफ़ से अन्दर जाकर रियाज़ुल जन्नह में या वहीं आसपास अ़स्र, मग़्रिब और अ़िशा पढ़ते। उसके बाद बाहर आते और बाबुस्सलाम से अन्दर जाकर बैठ जाते और तिलावत करते। फिर सलाम कर के वापस कमरे आ जाते।

भाग-6

मदीना मुनव्वरह का सफ़र

मदीना मुनव्वरह का सफ़र

मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरह का सफ़र तक़रीबन 450 किलोमीटर है।

हज से पहले या बाद में मस्जिदे नबवी की ज़ियारत मस्नून है।

सहीहैन में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी इस मस्जिद में एक वक़्त की नमाज़ मस्जिदे ह़राम के अ़लावह दूसरी मस्जिदों की एक हज़ार नमाज़ से बेहतर है"।

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः- "मेरी इस मस्जिद में एक वक़्त की नमाज़ दूसरी मस्जिद की एक हज़ार नमाज़ से अफ़ज़ल है, मस्जिदे ह़राम के सिवा"। **(मुस्लिम)**

● हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की एक हज़ार नमाज़ से अफ़ज़ल है मस्जिदे ह़राम के सिवा और मस्जिदे ह़राम की एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की एक लाख नमाज़ से अफ़ज़ल है"। **(अह़मद व इब्ने माजा)**

रौज़-ए-अक़्दस पर सलाम

जब ज़ियारत करने वाला मस्जिदे नबवी के पास पहुँचे तो उस को चाहिये कि मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले अपना दाहिना पैर दाख़िल करे और यह दुआ पढ़ेः-

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ
اللهِ، اَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ،
وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ،
اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

"बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि, अऊज़ू बिल्लाहिल् अ़ज़ीम वबिवज्हिहिल्करीम, व सुल्तानिहिल् क़दीम, मिनश्शैतानिर्रजीम, अल्लाहुम्मफ़्तह़ली अब्वाबा रह़मतिक"।

"अल्लाह के नाम से और दुरूद सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, अल्लाह अ़ज़्मत वाले की पनाह चाहता हूँ और उस की बुर्जुग चेहरे और क़दीम सल्तनत की पनाह चाहता हूँ शैतान मरदूद से। ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे"।

फिर मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े जिस में अल्लाह से दुनिया व आख़िरत की महबूब चीज़ें माँगे। अगर यह दोनों रकअ़तें रियाज़ुल् जन्नह में पढ़ें तो अफ़्ज़ल है वरना जहाँ जगह मिले। इसलिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद हैः-

"मेरे घर और मेम्बर के दर्मियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है"।

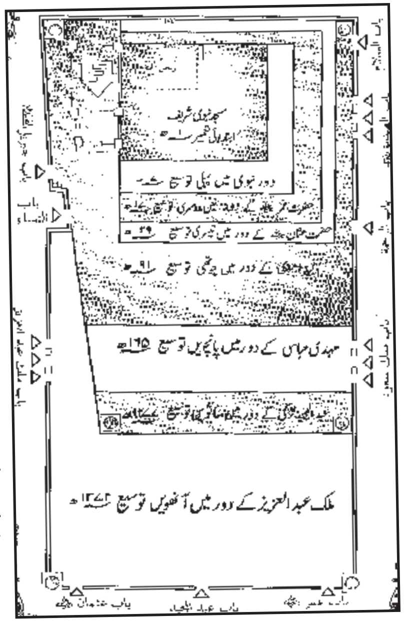

1395/1975 ह० तक मस्जिदे नबवी शरीफ़ की तौसीआ़त का नक़्शा

रौज़-ए-अक़्दस पर सलाम पढ़ने का तरीक़ा

नमाज़ के बाद निहायत अदब के साथ रौज़-ए-अतहर (सल्ल०) पर आये और दिल को तमाम दुनयावी चीज़ों से खाली कर के नज़र नीचे रखें और कोई ह़रकत ख़िलाफ़े अदब न करे और यह ख़याल करे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) लह़द शरीफ़ में क़िब्ले की तरफ़ मुँह किये हुए आराम फ़रमा हैं। इसलिए अ़ज़्मत व जलाल का लिहाज़ करते हुए दर्मियानी आवाज़ से सलाम पढ़े।

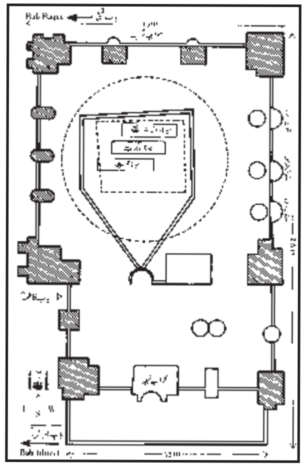

जालियों के अन्दर हुज्रे शरीफ़ का नक़्शा

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ"

"अस्सलामु अ़लैका या रसूलल्लाहि"

या ज़ियारत करने वाला अपने सलाम में यूँ कहे तब भी कुछ ह़र्ज नहीं:

- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرِ خَلْقِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنْ جَمِيْعِ خَلْقِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِ وُلْدِ آدَمَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ
اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَاَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَكَشَفْتَ الْغُمَّةَ فَجَزَاكَ اللهُ، اَللّٰهُمَّ اٰتِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِيْ وَعَدْتَّهُ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ۔

"अस्सलामु अ़लैका या ह़बीबल्लाहि, अस्सलामु अ़लैका या ख़ैरि ख़ल्क़िल्लाहि, अस्सलामु अ़लैका मिन जमीअ़ ख़ल्क़िल्लाहि, अस्सलामु अ़लैका या सय्यिदिउल्दि आदमा, अस्सलामु अ़लैका अय्यहुन्नबीय्यु वरह़मतुल्लाहि वबरकातहू अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लहु वह़दहु ला शरीकालहु वअश्हदु अन्नका या रसूलल्लाहि क़द बल्लग़ता रिसालता वअददइतल अमानता वनसह़तल् उम्मता वकशफ़तिल् ग़ुम्मता फ़जज़ाकल्लाहु अल्लाहुम्मा आतिहिल वसीलता वल्फ़ज़ीलता वद्दरजतर्राफ़ीअ़ता वब्अ़स्हु मक़ाममहमूदल्लज़ी वअ़दतहु इन्नका ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द"।

सलाम के अल्फ़ाज़ में जितना चाहे ज़्यादह कर सकता है, मगर सलफ़ का मामूल इख़्तिसार (छोटे) का था और इख़्तिसार ही को बेहतर समझते थे और

अगर किसी को यह अल्फ़ाज़ पूरे याद न हों या ज़्यादा वक़्त न हो तो जितना याद हो या कह सकता हो कह ले कम से कम मिक़्दार 'अस्सलामु अ़लैकुम या रसूलल्लाह' है।

अगर किसी शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में सलाम अ़र्ज़ करने के लिए कहा हो तो उस का सलाम भी अपने बाद इस तरह़ अ़र्ज़ करे।

- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ مِنْ [यहाँ उसका नाम लें जिसकी तरफ़ से सलाम पेश करना हो] يَسْتَشْفِعُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ

"अस्सलामु अ़लैका या रसूलल्लाहि मिन [यहाँ उसका नाम लें जिसकी तरफ़ से सलाम पेश करना हो] *यस्तश्फ़ओ बिका इला रब्बिका"।*

और अगर बहुत से लोगों ने सलाम अ़र्ज़ करने को कहा हो और नाम याद न रहे तो सब की तरफ़ से इस तरह़ सलाम अ़र्ज़ करे।

- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ مِنْ جَمِيْعِ مَنْ اَوْصَانِيْ بِالسَّلَامِ عَلَيْكَ

"अस्सलामु अ़लैका या रसूलल्लाहि मिन जमीअ़ि मन औसानी बिस्सलामि अ़लैका"

सलाम पढ़ने के बाद दाहिनी तरफ़ को हट कर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के चेहरे मुबारक के सामने खड़े होकर सलाम पढ़ेः–

- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ وَثَانِيَهُ فِي الْغَارِ وَرَفِيْقَهُ فِي الْاَسْفَارِ اَبَابَكْرِنِ الصِّدِّيْقِ جَزَاكَ اللهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ خَيْرًا

"अस्सलामु अ़लैका या ख़लीफ़ता रसूलिल्लाहि वसानियतहू फ़िल् ग़ारि वरफ़ीक़हू फ़िल् अस्फ़ारि अबा बकरिनिस्सद्दीक़ जज़ाकल्लाहु अ़न उम्मति मुह़म्मदिन ख़ैरा"।

फिर एक हाथ दाहिनी तरफ़ को हट कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे के मुक़ाबिल खड़े होकर सलाम पढ़ेः-

● اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عُمَرَ الْفَارُوْقَ الَّذِىْ اَعَزَّ اللّٰهُ بِهٖ اْلِاسْلَامَ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ خَيْرًا۔

“अस्सलामु अलैका या अमीरुल् मूमिनीन उमारअल् फ़ारूक़अल्लज़ी अअ़ज़्ज़ल् लाहु बिहिल् इस्लामा जज़ाकल्लाहु अ़न उम्मति मुहम्मदिन ख़ैरा”।

इन दोनों हज़रात पर सलाम के अल्फ़ाज़ में भी कमी ज़्यादती का अख़्तियार है और अगर किसी ने सलाम पहुँचाने के लिए कहा हो तो उस का सलाम भी पहुँचा दें।

फिर इस के बाद अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना बयान करे और दुरुद शरीफ़ पढ़े। अपने लिये और अपने वालिदैन, मशायख़, अह़बाब, अक़ारिब और सब मुसलमानों के लिए दुआ़ करें और मुझ नाकारा (मुह़म्मद सरवर) की तरफ़ से सलाम भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दरबारे आ़ली में पहुँचा दें और ख़ात्मा बिल् ख़ैर की दुआ़ भी फ़रमा कर ममनून फ़रमाएँ। जज़ाकुमुल्लाह।

ज़ियारत के बाद दुआ़ से फ़ारिग़ होकर दुरुद जिस क़दर हो सके पढ़ें।

● उसके बाद हो सके तो ‘सुतूने ह़नाना’, ‘सुतूने आइशा’ और बाक़ी सुतूनों के पास दुआ़ इस्तिग़फ़ार करे, लेकिन ज़रूरी न समझे।

● यह ज़ियारत सिर्फ़ मर्दों के लिए मशरुअ़ है। औ़रतों के लिए क़ब्रों की ज़ियारत जायज़ नहीं। जैसा कि नबी करीम (सल्ल०) से साबित है कि आप ने क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औ़रतों और क़ब्रों पर मस्जिद बनाने वाले और चिराग़ जलाने वाले लोगों पर लअ़नत फ़रमाई।

नोट– ज़ायर को चाहिए कि पाँचों वक़्त की नमाज़ें मस्जिदे नबवी में पढ़े और उस में कसरत से ज़िक्र, दुआ़ और नफ़्ली नमाज़ों का एहतिमाम करे और ज़्यादह सवाब कमाने की इस फ़ुर्सत को ग़नीमत समझे। इसी तरह़ ‘रौज़तुल् जन्नह’ में

कसरत से नफ़्ली नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है।

ज़ियारत के वक़्त

● किसी के लिए यह जायज़ नहीं कि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) से किसी ह़ाजत को पूरी करने या किसी मुसीबत को दूर करने या मरीज़ को शिफ़ा देने का सवाल करे, क्योंकि यह सब ह़ाजात सिर्फ़ अल्लाह से माँगी जाती हैं। उन का वफ़ात याफ़्ता शख़्स से माँगना अल्लाह के साथ शिर्क है और ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत करना है।

इसी तरह़ किसी के लिए यह भी जायज़ नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से शफ़ाअ़त माँगे इसलिए कि यह अल्लाह तआ़ला का ह़क़ है और उसी से माँगना चाहिए, जैसा कि उसी ने फ़रमाया–

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا (सूरः अल् ज़ुमर-44)

कह दो सारी शफ़ाअतें अल्लाह ही के लिए हैं।

अल्बत्ता यह कह सकते हैं कि ऐ अल्लाह! अपने नबी को मेरा शफ़ीअ़ बना, ऐ अल्लाह! अपने फ़रिश्तों और मोमिन बन्दों को मेरा सिफ़ारिशी बना, ऐ अल्लाह! मेरे फ़ौत शुदह बच्चों को मेरा सिफ़ारिशी बना, वग़ैरह, लेकिन मुर्दों से कुछ नहीं माँगना चाहिए न शफ़ाअ़त, न दूसरी चीज़, चाहे वह अम्बिया हों या ग़ैर अम्बिया इसलिए कि ऐसा करना मशरूअ़ नहीं।

मस्जिदे क़ुबा और जन्नतुल् बक़ीअ़ की ज़ियारत–

मदीना की ज़ियारत करने वाले के लिए मस्जिदे क़ुबा की ज़ियारत करना और उस में नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है। जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की ह़दीस सह़ीह़ैन में है कि नबी (सल्ल०) मस्जिदे क़ुबा की ज़ियारत सवारी पर और पैदल चलकर करते थे और उस में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते थे। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

और सहल बिन हुनैफ़ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया–

“जिस ने अपने घर वुज़ू किया, फिर मस्जिदे क़ुबा आकर उस में नमाज़ पढ़ी उस के लिए एक उ़मरह का अज्र है”।

क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त

इसी तरह़ बक़ीअ़, शोहदा-ए-उह़द की क़ब्रों और ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) के क़ब्र की ज़ियारत भी मस्नून है, क्योंकि नबी (सल्ल०) उन की ज़ियारत करते और उन के लिए दुआ़ फ़रमाया करते थे और आप (सल्ल०) का यह इर्शाद भी है, “क़ब्रों की ज़ियारत करो वह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती हैं”। (मुस्लिम)

रसूल (सल्ल०) सह़ाबा-ए-किराम को तअ़लीम देते थे कि जब वह क़ब्रों की ज़ियारत करें तो यूँ कहेंः-

اَلسّلامُ عَلَيْكَ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ وَإِنَّا اِنْشَآءَ
اللهُ بِكُمْ لَا حِقُوْنَ۔ اَللّٰهُمَّ اَغْفِرْ لَنَا لِاَهْلِ
اَلْبَقِيْعِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ۔

“अस्सलामु अ़लैका दारा क़ौमिन मूमिनीन वइन्ना इन्शाअल्लाह बिकुम ला ह़िक़ूना अल्लाहुम्मग़्फ़िर लना लिअहलिल् बक़ीअ़। अल्लाहुम्मग़्फ़िर लना वलाहुम”।

ऐ उस दियार के रहने वाले मोमिनों और मुसलमानों! तुम पर सलाम हो और हम भी इन्शाअल्लाह तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मग़्फ़िरत फ़रमा अहले बक़ी की और ऐ अल्लाह! मग़्फ़िरत फ़रमा हमारी और उनकी। (सह़ीह़ मुस्लिम)

इन अहादीस से मालूम होता है कि क़ब्रों की शरअ़ी ज़ियारत का मक़्सद यह है कि वह आख़िरत की याद दिलाती हैं और इस से मुर्दो के साथ नेकी करने और उन के लिए दुआ़ और रह़म की दरख़्वास्त करने का मौक़ा मिलता है।

मदीना मुनव्वरह के अहम मक़ामात

मस्जिदे क़ुबा-

यह मस्जिदे क़ुबा अ़हदे नबवी (सल्ल०) की पहली मस्जिद है जो मदीना की आबादी से तीन मील के फ़ासले पर है। नबी करीम (सल्ल०) का इर्शादे गिरामी है कि “जो शख़्स बावुज़ू मस्जिदे क़ुबा में जाकर दो रकअ़त नफ़्ल अदा करेगा,

उसको उ़मरह का सवाब मिलेगा”।

मस्जिदे ग़मामा-

यह मस्जिद मदीना शहर ही में है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) यहाँ ई़दैन की नमाज़ पढ़ा करते थे। इसको मस्जिद मुसल्ली भी कहते हैं, हु़ज़ूर ने यहाँ नमाज़ इस्तिस्क़ा भी अदा फ़रमाई है।

मस्जिद क़िब्लतैन-

यह वह मस्जिद है जहाँ तह़वीले क़िब्ला का हुक्म दिया गया था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ज़ुह्र की नमाज़ के दौरान बैतुल् मुक़द्दस से ख़ान-ए-कअ़बः की तरफ़ मुँह फेर लिया था यह मस्जिदे नबवी से शिमाल मग़्रिब में वादी अ़क़ीक़ के क़रीब एक टीला पर है इस में एक मेह़राब बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ और दूसरा ख़ान-ए-कअ़बः की तरफ़ है।

उह़द का पहाड़-

उह़द का पहाड़ अपनी अस्ल शक्ल में अब तक मौजूद है। वह तमाम निशानात बाक़ी हैं जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से मन्सूब हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है “उह़द मुझ से मुह़ब्बत रखता है और मैं उह़द से मुह़ब्बत रखता हूँ”। मशहूर जंग उह़द की इसी मक़ाम पर हुई थी। इस के क़रीब शोहदा-ए-उह़द की क़ब्रें हैं। उन में सय्यदुश्शोहदा ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) की क़ब्र है और साथ ही ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ब्श (रज़ि०) और मुअ़सब बिन उ़मैर (रज़ि०) की क़ब्रें भी हैं।

ख़न्दक़-

यह मशहूर ख़न्दक़ है जो कुफ़्फ़ार के ह़मले के मुक़ाबले में खोदी गई थी उसके निशानात अभी बाक़ी हैं। उह़द और ख़न्दक़ को देखकर रसूले करीम (सल्ल०) की दिफ़ाई स्कीमों की अहमियत का अन्दाज़ा होता है।

इसी जगह मसाजिदे ख़म्सा भी थी, जो इस्लाम के पाँच अ़ज़ीम जरनलों के नाम पर मौसूम थी। ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि०) सय्यदना अ़ली (रज़ि०) सय्यदना सुलेमान फ़ारसी (रज़ि०) सय्यदना

सअ़द बिन मआ़ज़ (रज़ि०) और वह मस्जिद फ़तेह़ जहाँ हु़ज़ूरे पाक (सल्ल०) का ख़ेमा था।) लेकिन अब यहाँ एक ही मस्जिद बना दी गई है।

नोट- यह सब मक़ामात टैक्सी वाले एक ही मर्तबः में करवा देते हैं। अगर पहले उन्हें बता दिया जाये और किराया वग़ैरह तय कर लिया जाये तो वह ख़ुद ही सब जगह पहुँचा देते है।

जन्नतुल् बक़ीअ़-

यह मदीना पाक का मशहूर क़ब्रस्तान है जहाँ ह़ज़ारों सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) और अहले बैत मद्फ़ून हैं।

मस्जिदे नब्वी के सात सुतून

यूँ तो मस्जिदे नब्वी की हर जगह अहम है। मगर रियाजुल जन्नः के वह सात सुतून ख़ासतौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

1- सुतून ह़नाना-

यह मेह़राब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के मेम्बर से क़रीब है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस सुतून के पास खड़े होकर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया करते थे। यही वह खजूर का दरख़्त है जो लकड़ी का मेम्बर बन जाने के बाद आप के जुदाई पर बच्चों की तरह़ रोया था।

2- सुतून आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा

एक मर्तबा रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी मस्जिद में एक ऐसी जगह है कि अगर लोगों को वहाँ नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का इ़ल्म हो जाए तो वह कुरा अन्दाज़ी करने लगें। (तबरानी)

इस जगह की निशानी ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाई थी।

3- सुतून अबी लुबाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु-

इस जगह एक सह़ाबी ह़ज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) का क़ुसूर माफ़ हुआ

था, उन्होंने अपने आप को इस सुतून से बाँध लिया था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) अक्सर यहाँ नवाफ़िल अदा किया करते थे।

4- सुतून सरीर-

इस जगह सरवरे दो आ़लम (सल्ल०) एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और रात को यहीं आप के लिए बिस्तर बिछा दिया जाता था।

5- सुतून वफ़ूद-

बाहर से आने वाले वफ़ूद यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िरी देते थे आप उन से बातचीत फ़रमाया करते थे। उन में से अक्सर यहीं मुसलमान होते थे।

6- सुतूने ह़िर्स-

इस मक़ाम पर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) घर तशरीफ़ ले जाते तो कोई सह़ाबी पहरा देने के लिए आ बैठते थे।

7- सुतून जिब्रईल-

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ह़ज़रत दहिया कलबी की सूरत में वह़्य लेकर तशरीफ़ लाते तो अक्सर इस जगह बैठे नज़र आते। दरअ़सल यह तमाम सुतून उस मस्जिद के ह़िस्से में हैं, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में थी।

भाग–7

उ़मरह से मुतअ़ल्लिक़ ग़ल्तियाँ

तवाफ़ की ग़ल्तियाँ

1- कअ़बः की नामुकम्मल दीवार के अन्दर से तवाफ़ करना जिस ने ऐसा किया उस ने पूरे ख़ान-ए-कअ़बः का तवाफ़ नहीं किया इसलिए कि यह कअ़बः का एक हिस्सा है। इस तरह़ इस का हर वह चक्कर बातिल हो जाएगा जो कअ़बः की दीवार के अन्दर से किया हो।

2- तवाफ़ के सातों चक्करों में तेज़ चलना जबकि ऐसा करना तवाफ़ के सिर्फ़ तीन इब्तिदाई चक्करों के साथ ख़ास है।

3- ह़ज्र अस्वद को बोसा देने के लिए शिद्दत के साथ मज़ाहमत करना, कभी-कभी मारपीट और गाली गलौज की नौबत आ जाती है, ऐसा करना हरगिज़ सह़ी नहीं। तवाफ़ के सह़ीह़ होने के लिए ह़ज्रे अस्वद को बोसा देना हरगिज़ ज़रूरी नहीं, बल्कि दूर से उस की तरफ़ इशारा करना और अल्लाहु अकबर कहना काफ़ी होगा।

4- ह़ज्रे अस्वद को बरकत की नियत से छूना बिद्अ़त है, शरीअ़त में इस की कोई दलील नहीं, सुन्नत सिर्फ़ इस का इस्तिलाम और बोसा देना है अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत समझ कर।

5- ख़ान-ए-कअ़बः के तमाम गोशों का इस्तिलाम और उस की तमाम दीवारों का इस्तिलाम और छूना। नबी करीम (सल्ल०) ने ह़ज्रे अस्वद और रुक्न यमानी के अ़लावह ख़ान-ए-कअ़बः के किसी भी जुज़ का इस्तिलाम नहीं किया।

6- तवाफ़ के हर चक्कर के लिए अलग-अलग दुआ़ मख़्सूस करना रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित नहीं, सिर्फ़ इतना साबित है कि जब आप ह़ज्रे अस्वद के पास आते तो तक्बीर कहते और ह़ज्रे अस्वद और रुक्न यमानी के दर्मियान हर चक्कर के आख़िर में यह दुआ़ पढ़तेः-

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

7- बाज़ तवाफ़ करने वाले और तवाफ़ कराने वाले तवाफ़ की ह़ालत में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हैं कि दूसरे तवाफ़ करने वालों को तश्वीश होती है। यह भी तवाफ़ की ग़ल्तियों में से है।

8- मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ने के लिए मज़ाहमत करना ख़िलाफ़े सुन्नत है और इस से तवाफ़ करने वालों को तक्लीफ़ पहुँचती है। मस्जिद में किसी जगह भी तवाफ़ की दो रकअ़तें पढ़ लेनी काफ़ी होंगी।

सअ़ी की ग़ल्तियाँ

1- बाज़ लोग सफ़ा और मरवह पर पहुँच कर ख़ान-ए-कअ़बः की तरफ़ रुख़ कर के तक्बीर कहते वक़्त अपने हाथों से उस की तरफ़ इशारा करते हैं जैसे नमाज़ के लिए तक्बीर कह रहे हों, इस तरह़ इशारा करना सही नहीं, सुन्नत यह है कि अपने हाथ इस तरह़ उठाये जैसे दुआ़ के लिए उठाते हैं।

2- बाज़ लोग सअ़ी के दर्मियान पूरा वक़्त दौड़ते रहते हैं, ह़ालांकि सुन्नत यह है कि सिर्फ़ दोनों हरे निशानों के दर्मियान दौड़े और बाक़ी चलता रहे।

3- इसी तरह़ बाज़ लोग एह़राम की चादर बग़ल के नीचे से निकाले रहते हैं, जो ग़लत है, कंधे से ओढ़े रहना चाहिए।

कुछ ख़ास लफ़्ज़ों की तशरीह़

(1) एह़राम– एह़राम के माने ह़राम करना। ह़ाजी जिस वक़्त ह़ज या उ़मरह की नियत करके तल्बिया पढ़ता है, तो उस पर कुछ चीज़ें ह़लाल और मुबाह़ या ह़राम हो जाती हैं इसलिए इसको एह़राम कहते हैं और ज़ाहिर में उन दो चादरों को भी एह़राम कहते हैं जिनको ह़ाजी एह़राम की ह़ालत में इस्तेमाल करता है।

(2) तल्बिया– लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक........पूरी पढ़ना।

(3) तक्बीर– यानी *'अल्लाहु अकबर'* कहना।

(4) तस्बीह– यानी *'सुब्ह़ानल्लाह'* कहना।

(5) तहलील– यानी 'लाइलाहा इल्लल्लाह' कहना।

(6) इस्तिलाम– ह़ज्रे अस्वद को बोसा देना और हाथ से छूना या 'ह़ज्रे अस्वद' या 'रुक्न यमानी' को सिर्फ़ हाथ लगाना।

(7) इज़्तिबाअ़– एह़राम की चादर को दाहिने बग़ल के नीचे से निकालकर बाएँ कन्धे पर डालना।

(8) अय्यामे नहर– दस ज़िलूह़िज्जा से बारहवीं तक।

(9) मोह़रिम– एह़राम बाँधने वाला।

(10) जमरात– मिना में तीन मक़ाम हैं, जहाँ तीन सुतून बने हुए हैं यहाँ कंकरियाँ मारी जाती हैं इन्हें जमरात कहते हैं।

(11) ह़लक़– सर के बाल मुंडाना।

(12) ह़तीम– बैतुल्लाह के उत्तर जानिब दीवार से कुछ ह़िस्सा ज़मीन का घिरा हुआ है, उसको 'ह़तीम' या 'ख़तीरा' कहते हैं।

(13) दम– एह़राम की ह़ालत में कुछ चीज़ें जो मना हैं उसके करने से बकरी वग़ैरह ज़िब्ह़ करना वाजिब हो जाती है उसे दम कहते हैं।

(14) रुक्न यमानी– बैतुल्लाह के पश्चिम की ओर दक्षिणी कोने को कहते हैं।

(15) रुक्न इराक़ी– बैतुल्लाह का रुक्न इराक़ी उत्तर की ओर पूर्वी ह़िस्सा को।

(16) रुक्न शामी– बैतुल्लाह का पश्चिम की ओर उत्तरी ह़िस्सा को।

(17) रमल– तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में अकड़कर शाना (भुजाएँ) हिलाते हुए क़रीब-क़रीब क़दम रखकर तेज़ी से चलना।

(18) रमि– कंकरिया फेंकना।

(19) सअ़ी– सफ़ा और मरवह के दर्मियान सात चक्कर लगाना।

(20) शौत– बैतुल्लाह के चारों तरफ़ चक्कर लगाना।

(21) ह़ज तमत्तोअ़– ह़ज के महीनों में पहले उ़मरह करना, फिर उसी साल में ह़ज का एह़राम बाँधकर ह़ज करना।

(22) ह़ज किरान– ह़ज और उ़मरह दोनों का एह़राम एक साथ बाँधकर पहले उ़मरह करना और फिर ह़ज करना।

(23) मुफ़रिद– सिर्फ़ ह़ज का एह़राम बाँधने वाला।

(24) मीक़ात– वह जगह जहाँ से मक्का जाने वाले के लिए एह़राम बाँधना वाजिब है।

(25) मक़ामे इब्राहीम– जन्नती पत्थर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) जिस पत्थर पर खड़े होकर बैतुल्लाह को बनाया था, जो अब मताफ़ में पूरब की ओर एक शीशे में रखा हुआ है।

(26) मुल्तज़िम– ह़ज्रे अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दर्मियान की दीवार मीलैन, अख़्ज़रैन, सफ़ा और मरवह के दर्मियान दो हरी लाइटें लगी हुई हैं जिन के दर्मियान दौड़कर चला जाता है।

(27) उक़ूफ़– मैदान अ़रफ़ात या मुज़्दलिफ़ा में ख़ास वक़्त में ठहरना।

(28) यौमे अ़रफ़ा– नवीं ज़िलूहिज्जा को।

(29) यलमलम– यह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से आने वालों की मीक़ात है जहाँ से एह़राम बांधा जाता है।

भाग–8

उ़मरह करने का मुख़्तसर तरीक़ा

उमरह का तरीक़ा एक नज़र में

1- एह़राम बाँधने के बाद नियत करना।

2- बैतुल्लाह का तवाफ़ करना।

3- सफ़ा और मरवह की सई करना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

4- मीक़ात से एह़राम बाँधना।

5- सारे सर के बाल छोटे करवाना या सर मुंडवाना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नियत और एह़राम बाँधने का तरीक़ा

ह़ाजी के लिए एह़राम बांधने से पहले मीक़ात से पहले गुस्ल करना और बदन को ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है और अगर मुम्किन हो तो ह़जामत वग़ैरह से भी फ़रागत ह़ासिल कर लेनी चाहिए। मर्द एह़राम के लिए दो सफ़ेद चादरें जो कि जिस्मानी ढ़ांचे के मुताबिक़ बनी हुई न हों, इस्तेमाल करें जबकि औरतों के एह़राम के लिए कोई लिबास मख़्सूस नहीं है, फिर दिल से अपने ह़ज या उमरह की नियत करें और तल्बिया कहे और अगर कोई आदमी किसी की तरफ़ से ह़ज कर रहा हो तो वह नियत करने के साथ (اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ حَجًّا) कहते हुए उसका नाम भी ज़िक्र करे। (बुख़ारी, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

नोट- अगर ह़ज व उमरह के लिए जाने वाले को मक्का मुकर्रमा तक पहुँचने में किसी क़िस्म की रुकावट का डर हो तो उसे नियत करते वक़्त यह कहना चाहिए (اَللّٰهُمَّ مَحِلِّي حَيْثُ حَبَسْتَنِي) फिर अगर वह मक्का न पहुँच सका तो बग़ैर 'दम' दिये ह़लाल हो जाएगा (यानी एह़राम खोल सकता है।) (बुख़ारी)

1- बग़ल के बाल, ज़ेरे नाफ़ बाल, नाख़ून वग़ैरह कटा लें।

2- गुस्ल या वुज़ू करें तो नियत करें कि एह़राम बाँधने के लिए गुस्ल/वुज़ू कर रहे हैं।

3- दो बग़ैर सिली हुई चादर बाध लें, दोनों शानों को ढ़का रखें और अगर मकरुह वक़्त न हो तो सर ढ़ांक कर दो रकअ़त नमाज़ एह़राम की नियत से पढ़ें।

4- फिर सर से कपड़ा हटा लें और बैठे हुए उमरह की नियत करें- *या अल्लाह! मैं उमरह नियत करता हूँ, बस उस को मेरे लिए आसान बना दे और क़ुबूल फ़रमा* फिर तीन बार तल्बिया पढ़ें, उस के बाद दुरूद शरीफ़ और फिर दुआ माँगे।

5- एह़राम की ह़ालत में ऐसा जूता पहनना मना है जो बीच क़दम की उभरी हुई हड्डी को ढ़ांप ले, बेहतर है कि दो पट्टी वाली हवाई चप्पल पहनें।

6- दोनों शाने ढ़ाका रखें, ह़रम शरीफ़ जाएँ दाहिना पैर अन्दर रखें, मस्जिद में दाख़िले की दुआ पढ़ें, ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हों और एतिकाफ़ की नियत करे।

7- बैतुल्लाह पर नज़र डालें तो उस पर निगाह जमा दें और दुआ माँगें।

8- तक्बीर, तल्बिया और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए बैतुल्लाह तक पहुँचें और काली पट्टी से कुछ पहले बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के खड़े हो जाएँ।

9- अब यहाँ छः काम करना है-

तीन काम हरी लाइट से पहले करें। यानी

(i) तल्बिया पढ़ना बन्द कर दें।

(ii) इज़्तिबाअ़ करें यानी एह़राम की ऊपर वाली चादर को दाहिनी बग़ल से निकाल कर बाएँ कंधे पर डालें।

(iii) तवाफ़ की नियत करें।

(ब) तीन काम हरी लाइट के सामने करें। उस के लिए ज़रा दाएँ चलें। काली पट्टी पर इस तरह़ आ जाएँ कि सीना और मुँह ह़ज्रे अस्वद की तरफ़ हो यानी ह़ज्रे अस्वद का इस्तिक़बाल हो जाए।

और उस के बाद यह पढ़ें:-

(i) بِسْمِ اللهِ اَللهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ कहते हुए कानों तक हाथ उठाकर गिरा दें।

(ii) ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करें।

(iii) अपनी जगह पर खड़े-खड़े और पैर अपनी जगह पर जमाये हुए दाएँ तरफ़ मुड़ जाएँ और तवाफ़ शुरु करें।

10- तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में रमल करें यानी अकड़कर शाना हिलाते हुए क़रीब-क़रीब क़दम रखते हुए तेज़ी से चलें, तवाफ़ के बाक़ी चक्करों में रमल न करें।

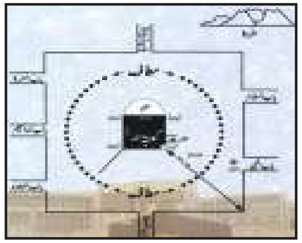

11- तवाफ़ के दूसरे और बाद के चक्करों में जब लौट कर हरी लाइट पर पहुँचें तो फिर सीना और मुँह ह़ज्रे अस्वद की तरफ़ करें। अब कानों तक हाथ उठाएँ ह़ज्रे अस्वद का इस्तिलाम करें। फिर पहले की तरह़ दाएँ तरफ़ मुड़कर तवाफ़ शुरु करें।

12- तवाफ़ के सातवें चक्कर के बाद ह़ज्रे अस्वद का आठवाँ इस्तिलाम होगा।

13- तवाफ़ ख़त्म कर के दोनों शानों को दोबारह ढ़ांक लें।

14- मुल्तज़िम पर आये और दुआ़ मांगें।

15- मक़ामे इब्राहीम (अ़लै०) या उस के पास दो रकअ़त नमाज़ वाजिबुत्त तवाफ़ पढ़ें।

16- नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ अदा करने के बाद आबे ज़मज़म पीना मुस्तह़ब है।

17- आबे ज़मज़म पीने के बाद हरी लाइट पर वापस आ जाये और ह़ज्रे अस्वद का नवाँ इस्तिलाम करे।

18- सअ़ी के लिए सफ़ा पर आये और सअ़ी की नियत करे।

19- सफ़ा पर तक्बीरे तह़रीमा की तरह़ हाथ न उठाये बल्कि क़िब्ला रुख़ होकर इस तरह़ हाथ उठाएँ जैसे दुआ़ में उठाये जाते हैं। फिर बुलन्द आवाज़ से तीन मर्तबः اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ पढ़ें। चौथा कलिमा, तीसरा कलिमा पढ़ें दुरूद शरीफ़ पढ़ें और दुआ़ माँगें, मरवह पर भी यही करें।

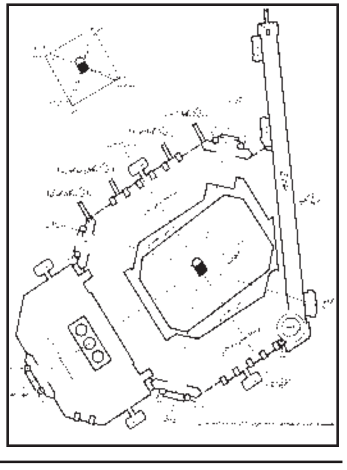

20- सफ़ा और मरवह के दर्मियान सअ़ी करें। दौराने सअ़ी चौथा कलिमा पढ़ते रहें और हर चक्कर में ख़ूब दुआ़ माँगें।

21- सफ़ा और मरवह के दर्मियान सब्ज़ सुतूनों की जगह तेज़ चलते हुए दुआ़ पढ़ें।

22- सअ़ी से फ़ारिग़ होने के बाद अगर मकरुह वक़्त न हो तो मस्जिदे ह़राम में आकर दो रकअ़त नफ़्ल अदा करें।

नोट-

1- ह़तीम को शामिल कर के तवाफ़ करें। यह वाजिब है।

2- ख़याल रखें कि दौराने तवाफ़ निगाह सामने हो, इधर-उधर न देखें।

3- तवाफ़ के दौरान दुआ़ की तरह़ हाथ न उठाएँ या नमाज़ की तरह़ हाथ न बाँधें।

4- दौराने तवाफ़ बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह न करें, यह नाजायज़ है। बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करना सिर्फ़ ह़ज्रे अस्वद के इस्तिक़बाल के वक़्त जायज़ है।

5- मक़ामे इब्राहीम (अ़लै०) को बोसा देना या उस का इस्तिलाम करना मना है।

6- अगर दुआ़ओं के अ़रबी अल्फ़ाज़ याद न हों तो अपनी ज़बान में दुआ़ माँगना जायज़ और बेहतर है कि कम से कम यह तो मालूम होगा कि दुआ़ माँगने वाला कह क्या रहा है अगर किसी दूसरे का सलाम पहुँचाना हो तो वह भी अपनी ज़बान में मुख़ातब होकर अ़र्ज़ करना मुनासिब है।

अल्लाह तआ़ला हम सब के ह़ज व उ़मरह और ज़ियारत को क़ुबूल फ़रमाए। **(आमीन)**

इस सफ़र में मुझ ख़ाकर (मुह़म्मद सरवर) को भी अपनी दुआ़ओं में हुस्ने ख़ात्मा की दुआ़ फ़रमा दें इनायत होगी।

दुआ़ओं का तालिब
मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उलूम नद्‌वतुल् उ़लमा, लखनऊ

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)
12. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स)
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)
17. जन्नत के ह़ालात और जन्नती
18. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
20. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले ह़स्ना की रौशनी में)
23. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
25. अज़ान क्या है?
26. आओ नमाज़ की ओर
27. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल
28. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा
29. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल
30. उ़मरह का आसान तरीक़ा
31. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
35. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ *(शरीअ़त की रोशनी में)*
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन
38. सूर-ए-फ़ातिहा की तफ़्सीर
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
40. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
41. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में
45. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
46. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध
52. मुहर्रम की ह़क़ीक़त
53. इस्लाम?

उर्दू पुस्तकें

54. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात
58. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा
59. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद

60. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम
62. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल
63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़
64. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़
68. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम
70. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
73. क़ियामत तक के फ़ित्ने (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पेशीनगोई की रोशनी में)
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत *(मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोशनी में)*
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़र्रुफ़
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर
107. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा
108. आ़माल सालिह़ा (भाग-1)
109. आ़माल सालिह़ा (भाग-2)
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत

112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
115. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
120 इल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
121. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
122. हिफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
124. ओ़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल
128. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
136. तर्बियत,रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
144. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त
145. नबियों व सहाबा का ज़रिया-ए-मआ़श
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
147. सहाबियात के अहम वाक़िआ़त
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़्वाज मुतह्हरात
149. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब

अ़रबी पुस्तकें

150. ग़ैर अ़रबी रस्मुलुख़त में क़ुर्आन की इशाअ़त
151. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वलहज़ारात अलुमुख़्तलह
152. अलु इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह
153. नुब्जतु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
154. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविलु क़ुर्आन वलु सुन्नह
155. अस्बाब तह़बतुलु अअ़माल वलु हमियतुलुनिया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वलु सुन्नह
156. अलु फ़ितन अलु वाक़िअ़ः इला क़ियामः अलु साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अलु शरीफ़
157. अलु नबी अलु ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुलु हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा
158. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा
159. अहमयतुलु दअ़वह वलु तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वलु सुन्नह
160. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िलु वेद
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वलु इस्लाम फ़ी जौए दियानात

अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण
164. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप

165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी
168. इस्लाम?

अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह़०)
170. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक-इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह़०)
171. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
173. रमज़ान का तोह़फ
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)
176. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)
177. दो सौ मअ़ाशरती मसायल
178. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द अव्वल)
179. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द दोम)
180. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द सोम)
181. तारीख़-ए-इस्लाम
182. क़ससुलु अम्बिया
183. मजमुआ़ अह़ादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
184. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
185. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
186. सीरत-ए-सह़ाबा
187. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
188. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
189. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
190. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
191. ईदैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
192. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
193. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
194. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
95. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
196. निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
197. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
198. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
199. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
200. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
201. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
202. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
203. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
204. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
205. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
206. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
207. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
208. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
209. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
210. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)

211. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
212. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई है़सियत
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
213. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
214. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
215. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
216. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
217. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
218. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
219. इस्लाह़-ए-मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
220. औ़रतों के मख़्सूस मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
221. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
222. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
223. रमज़ान, रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
224. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
225. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
226. रुयतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

क़ुर्आन का पैग़ाम

क़ुर्आन का आसान हिन्दी अनुवाद

सन्देश

इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान
मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ) (रह़०)

अनुवाद–

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(सदर- जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न
मर्कज़ुत्तौह़ीद अल् इस्लामी, अम्न कालोनी (सिकरौरी)
हरदोई रोड, लखनऊ (यू0पी0) इण्डिया–227107

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सुन्नतें

इसमें हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) के खाने, पीने, सोने, जागने कपड़ा पहनने, कंघा करने, तेल लगाने, नाख़ून काटने, इस्तिंजा करने, जूता पहनने, अंगूठी पहनने, मस्जिद और घर में दाख़िल होने, बाज़ार जाने, गुफ़्तगू करने, वुज़ू, गुस्ल, अज़ान, नमाज़, दुआ़, रमज़ान, ईदैन, सफ़र, सलाम, निकाह, मय्यित और उससे मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतों से लेकर आप (सल्ल०) के अख़लाक़ व आ़दात का तफ़सील से ज़िक्र है।

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

प्रकाशक–

मकतबः पयामे अम्न

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया